सत्यमेव जयते

सतलुज धारा

2023-24

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़

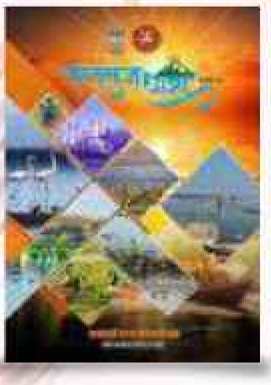

आवरण पृष्ठ विशेष

हरिके वेटलैंड (रामसर स्थल) एवं पक्षी अभ्यारण्य

इस नीर में चहकते पक्षी भी स्वाभिमानी हैं, दूर देश तक उड़ कर आते फिर भी कहलाते हिंदुस्तानी हैं।
है फक्र इन्हें अपनी आजादी का, बोली भाषा संस्कृति और परिवेश का, फिर क्यूं तू बंदे वहम् को पाले बैठा है।
निज भाषा से तेरा भी तो गहन नाता है, इन पंछियों के रंगों में सरोबार हो जा तूं।
अपनी भाषा में चहक, महक और गुलजार हो जा तू।

हरिके अर्थात हरि-के-पत्तन : सतलुज और ब्यास दरिया के संगम पर स्थित पक्षी अभ्यारण्य एवं रामसर स्थल हरि-के-पट्टन के नाम से भी जाना जाने वाला यह उत्तरी भारत का सबसे बड़ा आर्द्रभूमि है और जैव विविधता का एक प्रमुख केंद्र है जो 86 वर्ग कि.मी. में विस्तृत है। प्रवाह क्षेत्र की दृष्टि से सतलुज पंजाब की सबसे बड़ी नदी है और यहाँ की संस्कृतिक धरोहर को सहेजे हुए है। हरिके वेटलैंड और पक्षी अभ्यारण्य 1953 में बनाया गया था और यह तरनतारन साहिब, फिरोजपुर और कपूरथला जिलों में फैला हुआ है। आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र 4,100 हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करता है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त रामसर साइट (अंतर्राष्ट्रीय महत्व के लिए नामित एक आर्द्रभूमि) है। इस जगह की यात्रा के लिए सर्दी एक अच्छा समय है क्योंकि हिमालय, साइबेरिया और यूरोप से बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षी यहां आते हैं। यहां देखी जा सकने वाली कुछ प्रजातियों में बड़े जलकाग, बैंगनी मूरहेन, बार-सिर वाले हंस, सफेद पंखों वाला टर्न, गुच्छेदार बत्तख और सफेद आंखों वाला पोचार्ड शामिल हैं। आर्द्रभूमि में कई प्रकार के साँप, कछुए और मछलियाँ भी पाई जाती हैं। यहां दुर्लभ सिंधु नदी डॉल्फिन भी पाई जाती है। अभ्यारण्य के अंदर शांत हरिके झील है, जहां अधिकांश प्रकृति के मनोहारी एवं जैव विविधता के दर्शन संभव हैं।

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक
डा.वनोरा ई. नोंगरूम
चिकित्सा आयुक्त (उत्तरी क्षेत्र)

संरक्षक
राकेश कुमार
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक
मनोज तंवर
सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप संपादक
कुमार रविशंकर
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संपादन परामर्श

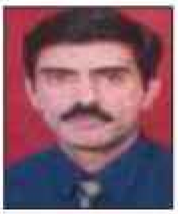

रजनीश सिंह चौधरी
उप निदेशक

सुशील सचदेवा
उप निदेशक

पंकज वोहरा
उप निदेशक

अजय कुमार महान
उप निदेशक

सोनम दावा
उप निदेशक

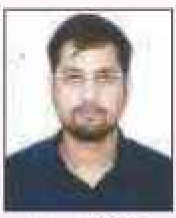

परगट सिंह
उप निदेशक

आर. के. दीक्षित
अधिशाषी अभियंता

डॉ राजीव छाबड़ा
राज्य चिकित्सा आयुक्त

डॉ. विपिन वर्मा
चि. सतर्कता अधिकारी

डॉ सुगीत टंडन
सीएमओ

संपादन सहयोग

सीमा रावत
सहायक निदेशक

विक्रांत गोसाईं
सहायक निदेशक

संजय कुमार गुप्ता
सहायक निदेशक

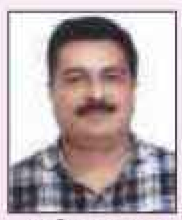

संदीप स्याल
सहायक निदेशक

अनंत प्रकाश वर्मा
सहायक निदेशक

टंकण एवं अन्य सहयोग
पूनम कांत, सहायक | राकेश कुमार, बहुकार्य स्टाफ

प्रकाशक
राजभाषा शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, प्लॉट सं. 3, सैक्टर 19-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ - 160019
☎ **0172-2775060, वी ओ आई पी -20172008, 2017030**

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
लेखों/रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक/रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	आलेख	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	संदेश	महानिदेशक	01
2.	संदेश	बीमा आयुक्त	02
3.	संदेश	चिकित्सा आयुक्त (उत्तरी क्षेत्र)	03
3.	संरक्षक की कलम से	राकेश कुमार, उप निदेशक (प्रभारी)	04
4.	संपादकीय	मनोज तंवर	05
5.	सामाजिक सुरक्षा का आधुनिक पर्याय	विक्रांत गोंसाई	06-07
6.	सांझी विरासत	मनोज तंवर	08-09
7.	सत्यमेव जयते	नेहा सैनी	10
8.	प्लास्टिक: जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारण	संजय कुमार गुप्ता	11
9.	आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का उदय	दिव्यम कुमार	12-13
10.	हिंदी व्यंग्य रचना	डॉ. पायल टंडन पत्नी डॉ सुगीत टंडन	14
11.	पर्यटन : अभिशाप या वरदान	सोनम दावा	15
12.	माता पिता-एक अविस्मरणीय सत्य	विक्रांत गोंसाई	16
13.	सुख	सुरिन्दर कुमार	17
14.	बाघ और बकरे की बेमिसाल दोस्ती	सुभाष चन्द्र गुप्ता	18
15.	संत कवियों का सामाजिक सरोकार	कुमार रविशंकर	19
16.	संघर्ष और जीत सिक्के के दो पहलू	वेद प्रकाश	20
17.	अनमोल वचन	जयंक आहुजा	20
18.	ख़ुशी का अर्थशास्त्र	परगट सिंह	21
19.	एसिस्क पखवाड़ा, सुविधा समागम	फोटोज	22
20.	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के साथ कनवर्जेंस बैठक	फोटोज	23
21.	हिंदी कार्यशाला	फोटोज	24-25
22.	खेल के मैदान से	फोटोज	26
23.	निधि आपके निकट	फोटोज	27
24.	मनोरंजन क्लब	फोटोज	28
25.	महिला दिवस 2024	फोटोज	29
26.	विराकास	फोटोज	30
27.	शाखा कार्यालय, रोजगार मेला	फोटोज	31
28.	हिंदी दिवस	फोटोज	32-33
29.	गणतंत्र दिवस	फोटोज	34
30.	बीमा आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ दौरा	फोटोज	35
31.	वार्षिक कार्यक्रम 2024-25	--	36-44
32.	कोई कमाल थोड़ी ही है	वजीर सिंह	45
33.	अच्छे नहीं लगते	वजीर सिंह	46
34.	मां जब तुमने छुआ था	विकास लखचौरा	47
35.	मैंने सीखा है	अमित बहादुर	48
36.	ज्योतिषशास्त्र	अनंत प्रकाश वर्मा	49
37.	समय की पुकार	नीलम	50
38.	जीवन का सत्य-जिंदगी , फर्क	जगदीश चंद्र	51
39.	ईश्वर में विश्वास – धैर्य	हरविंदर सिंह	52
40.	पर्यावरण संरक्षण	कविता रानी	53
41.	मौत के स्वाद का चटखारे लेता मनुष्य	सुमन लता	54
42.	वक्त नहीं	निरपेंद्र सिंह	55
43.	जब ठान लिया	हर्ष जिंदल	56
44.	बच्चों की बात	यश वर्मा	57
45.	हिंदी हूं	कुमार रविशंकर	58
46.	जिंदगी	संदीप स्याल	59
47.	पढ़ा लिखा	हर्ष जिंदल	60
48.	फुर्सत के लम्हें	राकेश कुमार	61
49.	ममता का आंचल	मनोज तंवर	62
50.	मेरी समुद्र यात्रा	संजीव कुमार	63
51.	केदारनाथ	कृतिका शर्मा	64-65
52.	धर्मशाला	साक्षी शर्मा	66-68
53.	कसौली	अनन्या सुपुत्री पंकज वोहरा	69
54.	कर्मचारी संघ संगठित शक्ति का सूत्रधार	अमनदीप सिंह	70
55.	ई- ऑफिस में हिंदी का प्रयोग	पूनम कांत	71
56.	कार्यालय में वर्ष 2024 की पहली तिमाही की एक झलक	सीमा रावत	72-73
57.	पेंटिंग	कनिष्का	74

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt of India)
E.S.I.C

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

संदेश

संख्या - ए-49/17/1/2016-रा.भा.
दिनांक - 09.02.2024

डॉ. राजेन्द्र कुमार (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

मुझे यह जानकर प्रसन्नता का अनुभव हुआ कि क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंजाब व चंडीगढ़ की गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** का वर्ष 2023-24 का नवीन अंक प्रकाशित किया जा रहा है। क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब व चंडीगढ़ द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका सतलुज धारा का निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है।

गृह पत्रिका के माध्यम से कार्मिकों की लेखन का विकास होने के साथ-साथ सूचनाओं का सरलतापूर्वक प्रसार होता है। इस पत्रिका के प्रकाशन से पाठक वर्ग को लाभ मिलेगा तथा मुझे विश्वास है कि सतलुज धारा राजभाषा हिंदी के साथ-साथ निगम की योजनाओं को प्रचारित करने में महती भूमिका निभाएगी।

'सतलुज धारा' के वर्ष 2023-24 के अंक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

राजेन्द्र कुमार

डॉ. राजेन्द्र कुमार

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

संदेश

संख्या - ए-49/17/3/2016-रा.भा.
दिनांक - 09.02.2024

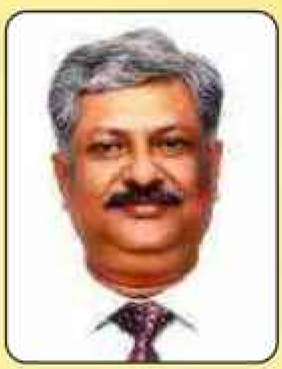

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

राजभाषा हिंदी भारत देश की सामासिक संस्कृति को एक सूत्र में पिरोने का परिचायक है। राजभाषा हिंदी में हमें अपने विचारों को व्यक्त करने में सहजता का अनुभव होता है।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि क्षेत्रीय कार्यालय पंजाब व चंडीगढ़ द्वारा वर्ष 2023-24 में गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** का नया अंक प्रकाशित किया जा रहा है। गृह पत्रिका सतलुज धारा हमेशा ही सृजनात्मकता से परिपूर्ण रही है।

पंजाब राज्य अपनी संस्कृति, खानपान और उल्लासपूर्ण जीवन का संदेश देने में अग्रणीय रहा है। यहाँ की भाषा-भोजन सदैव से ही रोचक रहे हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभापा हिंदी के प्रसार में उपयोगी सिद्ध होगी और इसमें आंचलिक विविधता के खिलते रंग भी दृष्टिगत होंगे। इस अंक के प्रकाशनार्थ मेरी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित हैं।

रत्नेश कुमार गौतम

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt of India)

सत्यमेव जयते

क्षेत्रीय कार्यालय / REGIONAL OFFICE
पंचदीप भवन, सेक्टर 19-ए, मध्य मार्ग चण्डीगढ़- 160019
Panchdeep Bhawan, Sector 19-A, Madhya Marg,
Chandigarh-160019 | Phone-0172-2544126.
Email: rd-punjab@esic.nic.in
Website: www.esic.gov.in/www.esic.in

संदेश

डॉ. वनोरा ई. नोंगरूम
चिकित्सा आयुक्त (उत्तरी क्षेत्र)

यह हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ की गृह पत्रिका "सतलुज धारा" के नए अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कर्मचारी राज्य बीमा निगम के कार्यालयों में सभी अपेक्षित प्रयत्न किए जा रहे हैं। इसी क्रम में गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार में विशेष महत्व रखता है। पंजाब क्षेत्र में नियुक्त होने के कारण मुझे इस क्षेत्र के विभिन्न स्थानों की यात्रा करनी होती है और इस दौरान मैंने पाया कि हिंदी भाषा को यहां के लोग भली-भांति प्रयोग करते हैं एवं पंजाब की स्थानीय भाषा से हिंदी भाषा बहुत मिलती-जुलती भी है। हिंदी भाषा यहां की संस्कृति से भी जुड़ी हुई है। मुझे विश्वास है कि "सतलुज धारा" का प्रकाशन पंजाब क्षेत्र के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार में सहयोगी सिद्ध होगा।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल तथा पत्रिका में अपने आलेख, कविता आदि रचनाएं देकर पत्रिका में अपना योगदान देने वाले कार्मिकों को बधाई देती हूँ। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं!

डॉ. वनोरा ई. नोंगरूम

संरक्षक की कलम से

विश्व की प्रमुख एवं समृद्ध पुरातन सभ्यताओं से भारतवर्ष का नाता रहा है और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हम अपनी उसी वैभवशीलता को प्राप्त करने के अपने लक्ष्य से ज्यादा दूर नहीं हैं। विजन दस्तावेज, 2024 के अनुसार हम आगामी 20-25 वर्षों तक विश्व की सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं मे शीर्ष पर बने रहेंगे। ऐसे में जब हम वैश्विक एवं सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित कर रहे होंगे तब हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न रहेगा कि कैसे हम भावी पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रेरित कर सकेंगे।

इसका सरल और सहज उत्तर है "भाषा"। यह सर्वविदित है कि विश्व के लगभग सभी प्रमुख एवं सम्पन्न राष्ट्रों ने अपनी भाषा को संजोकर रखा है और भाषा के माध्यम से ही उस देश की संस्कृति जीवंत रह पाने में समर्थ रही है।

शासकीय कार्यों में तकनीक का बढ़ता प्रयोग और आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक विधाओं ने न सिर्फ कार्यालयीन शैली को व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रभावित किया है, अपितु दैनंदिन कार्यों को अधिक सरल, सरस और सुरुचिपूर्ण भी बनाया है, जिससे कार्मिक सहजता के साथ हिंदी को अपनाकर राजभाषा के प्रति अपने नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं।

किसी भी कार्यालय की कार्य-संस्कृति इस बात पर निर्भर करती है कि उस कार्यालय के कार्मिकों में रचनात्मक अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति का विकास हो और गृह-पत्रिका का प्रकाशन उन्हें इस विधा के विकास हेतु एक उत्तम मंच प्रदान करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम पंजाब एवं चंडीगढ़ राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को लेकर सदैव गंभीर रहा है और यह देखकर संतोष होता है कि कार्मिक स्वप्रेरित होकर अपना अधिकाधिक कार्यालयी कामकाज हिंदी में करते हैं तथा समय-समय पर राजभाषा शाखा द्वारा आयोजित हिंदी के कार्यक्रमों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

राजभाषा गृह-पत्रिका "सतलुज धारा" का वर्ष 2023-24 का यह अंक क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ द्वारा अपने हितधारकों के प्रति चलाई जा रही विभिन्न योजनाओ और कार्यक्रमों को प्रदर्शित करते हुए कार्मिकों को हिंदी के प्रति कार्यालयीन कार्य में अधिक सहभागिता की ओर आकर्षित करेगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

पत्रिका के प्रकाशन एवं पत्रिका में अपने बहुमूल्य विचार, रचनाएँ एवं कलाकृतियों के माध्यम से पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने वाले सभी संबंधितों को मैं साधुवाद देता हूँ और पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

राकेश कुमार
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादकीय

परंपराएं इतिहास बनाती है, इतिहास से वर्तमान संवरता है।
वर्तमान भविष्य का परिचायक है, भविष्य में स्वर्णिम की आभा है।
मनुष्य की आभा स्वभाषा से है, स्वभाषा का परिष्कृत रूप राजभाषा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन में निगम में पदस्थ कार्मिकों का राजभाषा हिंदी के प्रति जुड़ाव एक सहज प्रक्रिया का हिस्सा बन चुका है और क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ के कार्मिक राजभाषा के सहज प्रयोग को लेकर इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि कार्यालयीन कार्य में तो वे मौलिक रूप से हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग कर ही रहे हैं साथ ही हिंदी के प्रति उनके विचारों की मौलिकता भी प्रेरणादायक है।

निगम कार्मिकों के राजभाषा हिंदी के प्रति गहन जुड़ाव को दर्शाती क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ की राजभाषा गृह पत्रिका "सतलुज धारा" का वर्ष 2023-24 का यह अंक सभी पाठकों के लिए निश्चय ही रोचक एवं पठनीय होगा।

पंजाब क्षेत्र, राजभाषा नियम, 1976 के अनुसार "ख" क्षेत्र में स्थित है। यदि देखा जाए तो इस क्षेत्र की मुख्य भाषा पंजाबी हिंदी के सन्निकट है तथा गुरुमुखी लिपि की स्वरूपता भी देवनागरी से काफी मिलती जुलती है।

विगत तेरह वर्षों से निगम की अविरल सेवा में विभिन्न पदसोपानों पर कार्यरत होते हुए मैंने राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग का दायरा प्रतिवर्ष बढ़ते स्वरूप में ही पाया है और दिनांक 11.08.2023 से क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में सहायक निदेशक (रा.भा.) के तौर पर राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन, प्रचार-प्रसार एवं विकास के प्रति जो संवैधानिक दायित्व मुझे मिला है, उसके निर्वहन हेतु मुख्यालय एवं अपने वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में पूर्ण मनोयोग एवं यथा सामर्थ्य प्रयासरत हूँ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की परिपाटी अनुरूप क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ ने भी वर्ष 2023-24 के दौरान मुख्यालय स्तर पर निर्धारित किए गए लक्ष्य एवं वर्ष के दौरान कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों को संजोकर गृह पत्रिका में समाहित करने का प्रयास किया है। गृह पत्रिका का प्रकाशन एवं लेख प्रकाशित करवाने की कार्मिकों की आतुरता राजभाषा शाखा के लिए अमृतकलश के समान है, जिससे विभिन्न नैसर्गिक रचनाओं का रस पान करने को मिलता है।

प्रौद्योगिकी के माध्यम से कार्यप्रणाली के निरंतर यूज़र फ्रेंडली होने के बढ़ते चलन के कारण भी कार्यालय में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा मिल रहा है।

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों के सहयोग से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में पूर्व की भांति आगे भी नए मानक स्थापित करने की क्षमता है। इसे लेकर मैं दृढ़ आश्वस्त हूँ और इस दिशा में सभी साथियों का सदैव की भांति सहयोगात्मक रवैया अपेक्षित है।

पत्रिका के प्रकाशन में सभी विद्वतजनों के सहयोग के लिए हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हुए मैं पत्रिका के चिरस्थायी प्रकाशन, क्रमिक विकास और उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

आपके बहुमूल्य सुझाव पत्रिका को लोकप्रिय बनाने में निश्चय ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

मनोज तंवर
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सामाजिक सुरक्षा का आधुनिक पर्याय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

विक्रांत गोंसाई, सहायक निदेशक

सदियों से परतंत्रता की जंजीरों में जकड़े भारत ने 15 अगस्त, 1947 को लंबे अरसे की जद्दोजहद, कुर्बानियों एवं कड़े संघर्ष के बाद आखिरकार स्वतन्त्रता का सूर्योदय देखा। स्वतंत्र भारत के समक्ष सुरसा के समान कठिनाइयां मुँह बाए खड़ी थी। सभी कठिनाइयों का एक ही हल था द्रुत गति से विकास। स्वतंत्र भारत को आत्मनिर्भर होने के लिए बड़े स्तर पर औद्योगिक क्रांति की दरकार थी और औद्योगिक क्रांति के लिए सबल, सक्षम, स्वस्थ मानव शक्ति की अत्यंत आवश्यकता थी। सामाजिक दृष्टि से सुरक्षित कार्यबल ही अपना कार्य समर्पण भाव से कर सकता है और देश के विकास को द्रुत गति प्रदान कर सकता है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम जोकि श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त निकाय है, का प्रादुर्भाव ऐसे ही समय हुआ था।

19 अप्रैल, 1948 को कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 पारित हुआ। इसे 24 फरवरी, 1952 से लागू किया गया। सर्वप्रथम इसे केवल 2 केन्द्रों पर ही लागू किया गया कानपुर और दिल्ली और इसके प्रथम बीमित व्यक्ति थे देश के प्रथम प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू।

आज भारत औद्योगिक क्षेत्र में जिस स्तर पर है उसमें कर्मचारी राज्य बीमा निगम के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। क्योंकि निगम ने इस विकास के पृष्ठ भूमि में कार्य करते हुए अपना दायित्व निष्ठा से निभाया है। निगम ने यह सुनिश्चित किया कि देश के अधिकाधिक कार्यबल को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाया जाए और उसे बीमारी की दशा में चिकित्सा एवं बीमारी हितलाभ, रोजगारजन्य चोट की दशा में चिकित्सा एवं स्थायी/अस्थायी अपंगता हितलाभ के साथ-साथ कुछ निश्चित परिस्तिथियों में पुनर्वास प्रशिक्षण, प्रसूति की दशा में चिकित्सा एवं मातृत्व हितलाभ, रोजगारजन्य चोट के कारण मृत्यु होने की दशा में उसके परिवार के आश्रित सदस्यों को आश्रित हितलाभ एवं जीवन साथी को चिकित्सा सहायता, कुछ शर्तों के साथ बेरोजगारी की दशा में बेरोजगारी भत्ता, कुछ विशिष्ट बीमारियों की दशा में अति विशिष्ट उपचार, व्यवसायजन्य रोगों की दशा में स्थायी/अस्थायी हितलाभ, व्यवसायजन्य रोगों के कारण मृत्यु होने की दशा में उसके परिवार के आश्रित सदस्यों को आश्रित हितलाम, बीमित व्यक्ति/महिला के सेवानिवृत होने के पश्चात भी उसे व जीवन साथी को नाम मात्र अंशदान के बदले चिकित्सा सहायता, किसी भी कारण मृत्यु होने पर दाह-संस्कार का व्यय आदि सुलभ करवाए जाएँ। इस प्रयोजन की पूर्ति हेतु सम्पूर्ण भारत में कार्यान्वित क्षेत्रों में क्षेत्रीय कार्यालय, उप-क्षेत्रीय कार्यालय, डीसीबीओ, शाखा कार्यालय, भुगतान कार्यालय, चिकित्सालय, अस्पताल, चल-चिकित्सालय आदि खोले गए हैं जो इस अधिनियम के उद्देश्यों की पूर्ति पूर्ण सक्षमता से कर रहे हैं।

यदि निगम की किसी सुविधा को लेकर कोई भी हितलाभार्थी असंतुष्ट है तो वह सुविधा समागम, लोक शिकायत निवारण प्रणाली या फिर जनसम्पर्क अधिकारी के माध्यम से अपने परिवाद का निवारण करवा सकता है। इसके अतिरिक्त कर्मचारी बीमा न्यायालय के माध्यम से भी निगम से जुड़े किसी भी विवाद का निपटारा करवा सकता है।

समय के साथ चलते हुये निगम ने सूचना प्रौद्योगिकी को भी अपनाया और बहुत हद तक निगम की कार्यप्रणाली कम्प्यूटरीकृत हो चुकी है। इस अधिनियम के अंतर्गत व्याप्त प्रतिष्ठान अपने एवं अपने कर्मचारियों का अंशदान ऑनलाइन चालान बनाकर डिजिटल भुगतान माध्यम से कर सकते हैं। इस प्रौद्योगिकी के कारण उन्हें अंशदान विवरणी निगम कार्यालय में देने के कर्तव्य से भी आज़ादी मिल गयी है। यही नहीं बीमित व्यक्ति अपना अंशदान विवरण एवं निगम द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं में से किन-किन का वह हकदार है, को भी ऑनलाइन देख सकता है। पहचान कार्ड को आधार से जोड़ देने से अब बीमित व्यक्ति को बीमा कार्यालय एवं चिकित्सालय/

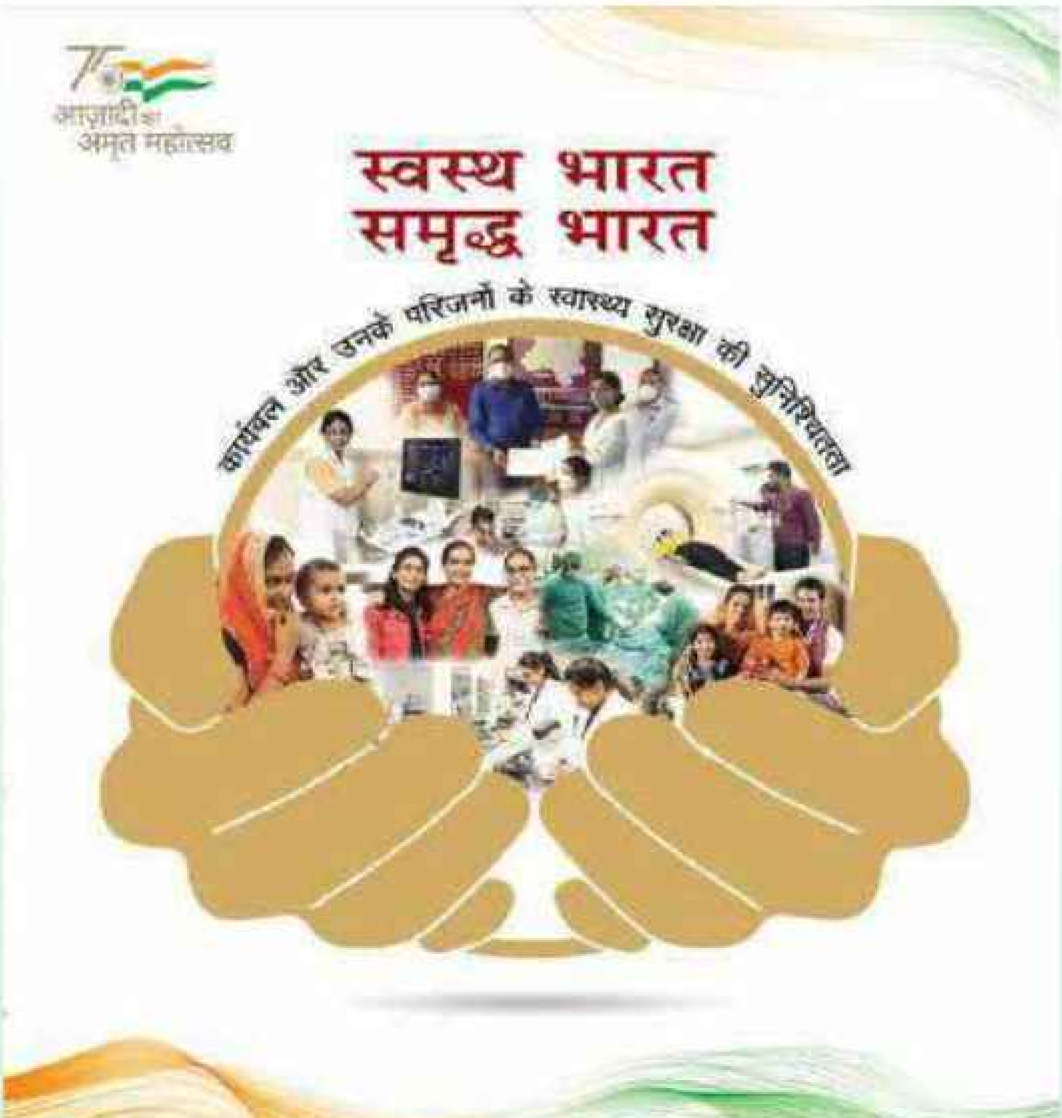

अस्पताल के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। बीमित व्यक्तियों/ महिलाओं व उनके आश्रित परिवार सदस्यों के बाह्य-रोगी उपचार हेतु भी हाल ही में निगम ने ऑनलाइन पंजीकरण प्रारम्भ किया है ताकि उपचार के लिए अब ओपीडी खिड़की के बाहर लंबी पंक्तियों से उन्हें आजादी मिल सके।

निगम लगभग 12 वर्षों से नकद भुगतान की राशि सीधे ही बीमित व्यक्तियों/महिलाओं के बैंक खातों में हस्तांतरित कर रहा है, जिससे पारदर्शिता बढ़ी है। निगम से जुड़ी सभी उपयोगी जानकारियाँ निगम के वेबसाइट www.esic.gov.in पर उपलब्ध है।

अत: निगम अपने नारे "आईपी हमारा वीआईपी" एवं "चिंता से मुक्ति" को सच्चे अर्थों में चरितार्थ कर रहा है।

सांझी विरासत

मनोज तंवर, सहायक निदेशक

दिनांक: 29.12.2023, दिन-शुक्रवार समय-9:30 (पूर्वाह्न), स्थान: रेलवे स्टेशन अंबाला कैंट, प्लैटफ़ार्म संख्या 2 पर मैं और मेरी माता जी अकाल तख़्त एक्सप्रेस ट्रेन का इंतजार कर रहे थे। तभी उद्घोषणा होती है कि उक्त ट्रेन अपने निर्धारित समय से दो घंटे की देरी से चल रही है। यह सुनकर हम (मैं, मेरी माता जी और मेरी 7 वर्षीय पुत्री) आराम से प्लैटफ़ार्म पर उपलब्ध सीटों पर बैठ जाते है। तभी मेरी पुत्री एकाएक पूछती है कि इस ट्रेन का नाम अकाल तख़्त क्यों है?

मैं भी छोटी बच्ची के मन में उत्पन्न इस जिज्ञासा से अवाक रह गया और फिर उसे विस्तार से सिख धर्म में अकाल तख़्त साहिब के महत्व को समझाया कि यह ट्रेन अमृतसर से आ रही है, जहां पर वर्ष 1609 में, श्री गुरु हरगोबिंद सिंह जी ने अमृतसर में श्री हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) के पास पंज तख्त 'अकाल तख्त' की पहली और सबसे महत्वपूर्ण स्थापना की। अकाल तख्त पंज तख्त का सर्वोच्च सिंहासन है और अमृतसर में स्वर्ण मंदिर परिसर के अंदर स्थित है।

पंज तख्त सिख धर्म के 5 महत्वपूर्ण गुरुद्वारे हैं जिनका विशेष सम्मान है।

पंज तख्त के अंतर्गत अन्य गुरुद्वारे हैं:

- तख्त श्री केशगढ़ साहिब, आनंदपुर साहिब (पंजाब)
- तख्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो (पंजाब)
- तख्त श्री पटना साहिब, पटना (बिहार)
- तख्त श्री हजूर साहिब, नांदेड़ (महाराष्ट्र)

फिर उसने प्रश्न किया कि यह ट्रेन कहाँ तक जाएगी तो मैंने उसे बताया कि यह ट्रेन पटना तक जाती है जहां पर तख्त श्री पटना साहिब स्थित है, जिसे सिख धर्म में दूसरा सबसे पवित्र तख्त माना जाता है। यह स्थान सरबंस दानी दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की जन्मस्थली के रूप में सिखों के परम पूजनीय है। यह सिखों की लौकिक शक्ति की पांच पीठों में से एक है और तीन सिख गुरूओं द्वारा अधिष्ठापित किया है। पराक्रम और निडरता का प्रतीक, यह तीर्थस्थान तीर्थयात्रियों के अंदर महान धर्मपरायणता को प्रेरित करता है और पटना शहर की यशस्वी विरासत में गर्व का स्थान रखता है।

पटना के एक पुराने मुहल्ले स्थित, जो पहले कूचा फारुख खान कहलाता था और हरिमंदिर गली के नाम से जाना जाता है, पटना में स्थित होने के कारण इस पवित्र स्थल को तख्त श्री पटना साहिब भी कहा जाता है। कभी पहले पूरब दिशा में सिख धर्म का प्रचार करने का केंद्र, यह पीठ श्री गुरु गोबिंद सिंह जी और यहाँ बीते उनके बचपन को श्रद्धांजलि का प्रतीक है।

दो महत्वपूर्ण आध्यात्मिक और ऐतिहासिक स्थानों के लिए यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के कारण ही इस ट्रेन का नाम अकाल तख़्त एक्सप्रेस रखा गया है।

ट्रेन आने में अभी भी लगभग एक घंटे का समय शेष था, तो बातों-2 में मैंने उसे बताया कि हमारे महापुरुष निरंतर रूप से पूरे देश-प्रदेश में भ्रमण करते रहते थे और धर्म का प्रचार करते हुए लोगों को सही कर्म अपनाकर अपनी जीविका निर्वाह करने का उपदेश देते थे। तभी तो पंजाब में स्थापित सिख धर्म के दो महत्वपूर्ण तख़्त सुदूर बिहार और महाराष्ट्र में भी स्थित है।

इसी प्रकार भगवान राम का जन्म तो अयोध्या में हुआ था परंतु विशेष कार्य की सिद्धि हेतु वे सुदूर दक्षिण भारत के विभिन्न स्थानों से होते हुए द्वीपीय देश श्रीलंका तक पहुँच गए और मार्ग में मिले लोगों का पथ प्रदर्शन करते हुए उन्हें सद् मार्ग पर चलने की राह दिखाई व कुरुतिपूर्ण कार्यों का अंत करते हुए बुराई व अनीति को त्यागकर अच्छाई व नीति सम्मत मार्ग पर चलने के लिए लोगों को प्रेरित किया। भगवान श्री राम द्वारा अपनाई गई जन कल्याण की नीतियों के परिप्रेक्ष्य में ही महात्मा गांधी जी ने राम राज्य की परिकल्पना की अवधारणा दी।

भगवान श्री राम के दिव्य गुणों एवं अलौकिक स्वरूप को चरितार्थ करने के आशय से ही अयोध्या में भगवान श्रीराम के जन्मस्थान पर भव्य राम मंदिर का निर्माण किया गया है, जिसमें भगवान राम के दिव्य बाल स्वरूप रामलल्ला की प्राण-प्रतिष्ठा की गई है।

इसी संदर्भ में हम भगवान श्री कृष्ण के जीवन स्वरूप का उदाहरण ले सकते है, जिनका जन्म मथुरा-वृंदावन की पावन भूमि पर हुआ व बाल सखा के रूप में ब्रज भूमि पर अपनी लीलाएं रची।

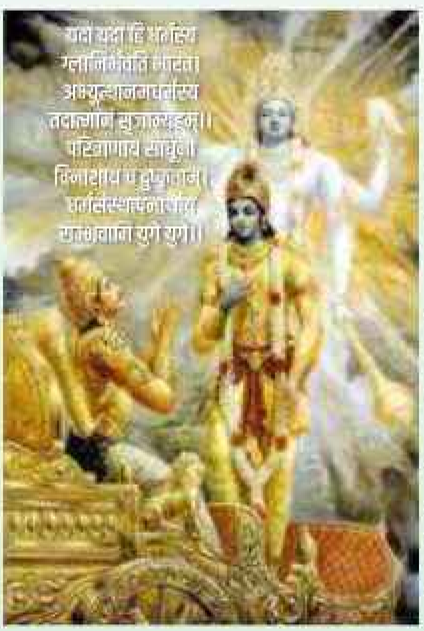

कालांतर में भगवान श्री कृष्ण महाभारत के युद्ध में कुरुक्षेत्र की भूमि पर पांडव पुत्र अर्जुन को कर्मज्ञान संहिता अर्थात गीता का उपदेश देते हैं, जोकि युगांतर तक मनुष्य को कर्मशीलता का ज्ञान देते हुए उसका मार्ग प्रशस्त करते हैं और धर्म की स्थापना को प्रतिस्थापित करते हैं।

और फिर अपनी प्रजा की सुरक्षा के दृष्टिगत चारों ओर से समुद्र से घिरी द्वारका नगरी का निर्माण करवाकर द्वारकाधीश कहलाते हैं व एक राजा के कर्तव्य बोध का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार हम पाते है कि भारतवर्ष की इस महान भूमि पर समय के काल खण्ड के साथ-साथ अनेकों महापुरुष अवतरित हुए और देश काल व भूखंड की सीमाओं को लांघते हुए मानव कल्याण एवं धर्म की स्थापना हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया परंतु अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहे।

तभी हमारे गंतव्य स्थान तक जाने वाली ट्रेन (अकाल तख़्त एक्सप्रेस) के प्लैटफ़ार्म संख्या 2 पर आने की उद्घोषणा होती है और हम ट्रेन में सवार होकर हंसी-खुशी अपनी यात्रा पर प्रस्थान करते हैं।

सत्यमेव जयते

नेहा सैनी, प्रवर श्रेणी लिपिक

जीवन पथ पर आगे बढ़ते हुए राह में ऐसी कई बाधाएं आती हैं जो हमें हमारे मार्ग से विचलित करती हैं तथा हमें भटकाती हैं किंतु उस क्षण यदि मनुष्य सत्य की राह पकड़ ले तो कठिन ही सही, परंतु मंज़िल मिलना तय है। जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने की एक मात्र राह सत्य है। 'सत्यमेव जयते' भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य माना जाता है, जिसका अर्थ है–

"हमेशा सत्य की ही जीत होती है"

देश के राष्ट्रीय प्रतीकों के बारे में हम बचपन से पढ़ते आ रहे हैं। जैसे कि हमारा राष्ट्रीय झंडा 'तिरंगा' है, राष्ट्रीय गान 'जन गण मन', राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' है, इत्यादि। इसी प्रकार हमारा राष्ट्रीय प्रतीक अशोक स्तंभ है। सम्राट अशोक द्वारा सारनाथ में बनवाए गए स्तंभ से यह राष्ट्रीय चिह्न लिया गया है। मूल स्तंभ में शीर्ष पर चार सिंह हैं जो एक दूसरे की ओर पीठ किए हुए हैं लेकिन सामने से तीन सिंह ही नज़र आते हैं। सामने धर्म चक्र बना है और एक अश्व और बैल भी बने हुए हैं। चार सिंह सभी दिशाओं में धर्म का प्रसार करने के प्रतीक हैं। यह शक्ति, साहस, आत्मविश्वास और गौरव का प्रतीक है। 26 जनवरी 1950 को देश का संविधान लागू होने के साथ ही इस राज चिह्न को भारत ने अपनाया था। कहा जाता है कि पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने 'सत्यमेव जयते' का नारा वर्ष 1918 में दिया। सत्यमेव जयते का सूत्र वाक्य 'मुंडक' उपनिषद से लिया गया है। यह मूलतः 'मुंडक' उपनिषद के सर्वज्ञान मंत्र का एक हिस्सा है। 'मुंडक' उपनिषद के जिस मंत्र से यह अंश लिया गया है, वह है-

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमंत्यृषयो ह्याप्तकामो यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥

अर्थात सत्य की ही विजय होती है असत्य की नहीं। सत्य की राह पर चल कर ही श्री राम ने रावण से युद्ध जीता तथा माता सीता को मुक्त करवाया था। सत्य मार्ग भक्ति का भी मार्ग है । इसी मार्ग से माता अहिल्या ने प्रभु राम के स्पर्श से मुक्ति प्राप्त की । यही वह मार्ग है जिससे होकर आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है जैसे मीरा अपनी असीम भक्ति द्वारा श्री कृष्ण में विलीन हो गयी। ऋषि मुनियों ने भी इसी राह से सत्य के परम धाम को प्राप्त किया।

मनुष्य का सामाजिक मूल्य इस बात से आँका जाता है कि वह अपने देश, समाज और परिवार के प्रति कितना ईमानदार है। सच्चाई मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा धर्म है। तभी तो कहा गया है कि 'सत्यम शिवम सुंदरम' अर्थात ईश्वर ही सत्य है, सत्य ही शिव अर्थात कल्याणकारी है और जो कल्याणकारी है वही सुंदर है। अतः हमें सदैव सत्य पथ पर अग्रसर रहना चाहिए। आज के इस दौर में सच के अनुयायी बेशक कम हैं परंतु फिर भी कई ऐसे उदाहरण हैं जो हमारा हौसला बढ़ाने में कारगर है। सत्य हमें कमज़ोर नहीं अपितु सुदृढ़ बनाता है। सच ही अन्याय से लड़ने की प्रेरणा देता है। सच का रास्ता कठिन तो बहुत है परंतु जब मनुष्य एक बार ठान ले तो उसे ब्रह्मांड की कोई ताकत उसकी राह से पृथक नहीं कर पाएगी। यही सच का महत्व है, यही सच की ताकत है और यही सच की जीत है। सच की लड़ाई लम्बी ज़रूर हो सकती है परन्तु अंत में सत्य की ही जीत निश्चित है। राह में आई कठिनाइयों से जूझते हुए ही इंसान तप कर सोने से कुंदन में बदल जाता है और उसका यही रूप उसे बाकियों से पृथक बनाता है। अंत में यही कहा जा सकता है-

झूठ का प्रतिबिंब छठ ही जाएगा, सच का आईना ही राह दिखाएगा ।
झूठ की ताकत लाख सही, पर सच के आगे टिकती नहीं ।
सत्य ही वो राह है,जो पथ करेगा सरल, जीवन के संघर्ष को, कर देगा सुगम ।
सच के ढांचे में जो ढल जाए, कुंदन बन के ही बाहर आये ।
जो चलता है सच के संग, जीत ही जाता है ज़िन्दगी की जंग ।

प्लास्टिक : जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारण

संजय कुमार गुप्ता, सहायक निदेशक

प्लास्टिक आज सर्वाधिक व्यापक रूप से उपयोग की जानेवाली पैट्रोकेमिकल सामग्रियों में से एक है। इसका उपयोग विभिन्न उत्पादों जैसे एकल-उपयोग बैग, एक बार उपयोग की जानेवाली कटलरी और विभिन्न अन्य दैनिक उपयोग के उत्पादों को बनाने के लिए किया जाता है। लेकिन इन उत्पादों के साथ समस्या इनके इस्तेमाल के बाद पैदा होती है। वास्तव में, प्लास्टिक का अधिकतर उपयोग कम प्रयोग किए जाने वाले ऐसे उत्पादों को बनाने में किया जाता है जिन्हें एक या दो बार प्रयोग के बाद फेंक दिया जाता है। यह प्लास्टिक पुनः सैनिटरी लैंडफिल में फेंक दिया जाता है।

एक अनुमान के अनुसार उत्पादित प्लास्टिक का 90% से अधिक पुर्ननवीनीकरण या पुन: उपयोग किए जाने के स्थान पर लैंडफिल साइट में जा रहा है। यह प्लास्टिक लैंडफिल के रूप में प्रकृति के लिए खुले भूमि के एक टुकड़े में डंप किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) का अनुमान है कि 2,000 कचरा ट्रकों के बराबर प्लास्टिक को दुनिया के महासागरों, नदियों और झीलों में फेंक दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, संयुक्त राष्ट्र की टिप्पणी है कि प्लास्टिक प्रदूषण एक वैश्विक समस्या है। प्रतिवर्ष 19-23 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा जलीय पारिस्थितिक तंत्र में विलीन हो जाता है, जिससे झीलें, नदियाँ और समुद्र प्रदूषित होते हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण प्राकृतिक वासों और प्रक्रियाओं को बदल सकता है एवं जलवायु परिवर्तन के द्वारा पारिस्थितिक तंत्र की अनुकूलन क्षमता को कम कर सकता है तथा लाखों लोगों की आजीविका, खाद्य उत्पादन क्षमताओं और सामाजिक कल्याण को सीधे रूप से प्रभावित कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम या यूएनईपी का कार्य निकाय दर्शाता है कि प्लास्टिक प्रदूषण की समस्या के अस्तित्व के अनुमान को शून्य में नहीं देखा जा सकता तथा सभी बाहरी तत्वों एवं कारकों का इस पर प्रभाव एवं योगदान है। जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिक तंत्र के क्षरण और संसाधन उपयोग जैसे अन्य पर्यावरणीय कारकों के साथ-साथ प्लास्टिक के पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य जोखिमों का आकलन करने की आवश्यकता है।

जीवनशैली में परिवर्तन जैसे कुछ कदमों द्वारा प्लास्टिक प्रदूषण के पारिस्थितिक तंत्र पर पड़ने वाले दुष्परिणामों को प्रभावी रूप से कम किया जा सकता है। जीवनशैली में किए जाने वाले ये बहुत ही सरल और बुनियादी संशोधन हैं जैसे एकल-उपयोग प्लास्टिक बैग को ना कहना और दुकानों पर प्लास्टिक की पानी की बोतल खरीदने के बजाय अपनी खुद की पानी की बोतल ले जाना।

हम इस ग्रह पर 100% प्लास्टिक प्रदूषण के लिए जिम्मेदार हैं क्योंकि प्लास्टिक एक मानव निर्मित सामग्री है। साथ ही हम प्लास्टिक की समस्या का एकमात्र व्यावहारिक समाधान भी हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उदय

रोजगार के अवसर एवं चुनौती

दिव्यम कुमार, बहु कार्य स्टाफ

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) विभिन्न उद्योगों को नया आकार देने वाली एक प्रमुख शक्ति बन गई है, जिससे नौकरी विस्थापन और बेरोजगार भविष्य की संभावना के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं। हालाँकि, उन चुनौतियों और अवसरों दोनों पर विचार करना आवश्यक है जो AI नौकरी बाजार में लाता है। इस निबंध का उद्देश्य नई नौकरी के अवसरों को अनुकूलित करने और जब्त करने के साधन के रूप में रीस्किलिंग और अपस्किलिंग के महत्व पर जोर देते हुए स्वचालन और AI प्रौद्योगिकी के कारण नौकरी विस्थापन के संभावित खतरों का पता लगाना है। शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश करके, व्यक्ति, संगठन और सरकारें बदलते परिदृश्य को नेविगेट कर सकते हैं और एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जहां AI मानव क्षमताओं को बढ़ाता है और बेहतर नौकरी की संभावनाओं को जन्म देता है।

भविष्य का ख़तरा

AI के उदय को लेकर प्राथमिक चिंताओं में से एक व्यापक नौकरी विस्थापन की संभावना है। AI प्रौद्योगिकियों में नियमित और दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करने की क्षमता है जो वर्तमान में मनुष्यों द्वारा किए जाते हैं। इसका विनिर्माण, परिवहन और ग्राहक सेवा जैसे उद्योगों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है, जहां मशीनें अक्सर इन कार्यों को अधिक कुशलतापूर्वक और सटीकता से कर सकती हैं। परिणामस्वरूप, इन क्षेत्रों में नौकरी छूटने की वास्तविक संभावना है, जिससे बेरोजगारी और आर्थिक व्यवधान पैदा हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, AI की उन्नति नौकरी बाजार द्वारा मांगे गए कौशल और मौजूदा कार्यबल के पास मौजूद कौशल के बीच एक बेमेल पैदा कर सकती है। जैसे-जैसे AI अधिक प्रचलित होता जाएगा, डेटा विश्लेषण, मशीन लर्निंग जैसे क्षेत्रों में तकनीकी कौशल और विशेषज्ञता वाले व्यक्तियों की आवश्यकता बढ़ेगी। और AI विकास. जिन लोगों में इन कौशलों की कमी है, वे नौकरी बाजार में खुद को नुकसान में पा सकते हैं, बेरोजगारी या अल्प-रोज़गार का सामना कर सकते हैं।

इसके अलावा, AI द्वारा संचालित तकनीकी परिवर्तन की तीव्र गति आर्थिक व्यवधान पैदा कर सकती है। जब बड़े पैमाने पर नौकरी विस्थापन होता है, तो आय असमानता बढ़ सकती है क्योंकि जो लोग विस्थापित होते हैं उन्हें रोजगार के नए अवसर खोजने के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है। इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता की क्रय शक्ति में गिरावट आ सकती है, जिसका उद्योगों और रोजगार के अवसरों पर व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। इस प्रकार, बेरोजगार भविष्य का खतरा एक वैध चिंता है जिसे संबोधित करने की आवश्यकता है।

रीस्किलिंग और अपस्किलिंग के माध्यम से बेहतर नौकरी के अवसर

जहां न करी विस्थापन के बारे में चिंताएं हैं, वहीं AI का उदय नई नौकरी भूमिकाओं और रीस्किलिंग और अपस्किलिंग के माध्यम से बेहतर रोजगार की संभावनाओं के अवसर भी प्रस्तुत करता है।

AI के सकारात्मक परिणामों में से एक नई नौकरी भूमिकाओं का उद्भव है जिसके लिए तकनीकी और मानव कौशल के संयोजन की आवश्यकता होती है। इन भूमिकाओं में अक्सर AI सिस्टम के साथ काम करना और उनके द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने

के बजाय उनकी क्षमताओं का लाभ उठाना शामिल होता है। उदाहरण के लिए, AI प्रशिक्षक AI सिस्टम को विशिष्ट कार्य करने के तरीके सिखाने के लिए जिम्मेदार हैं, AI द्वारा उत्पन्न बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण और व्याख्या करने के लिए डेटा विश्लेषकों की आवश्यकता होती है और AI नैतिकतावादी यह सुनिश्चित करते हैं कि AI सिस्टम विकसित और जिम्मेदारी से उपयोग किए जाते हैं। ये भूमिकाएँ न केवल नए अवसर प्रदान करती हैं बल्कि ऐसे कौशल की भी आवश्यकता होती है जिन्हें पुनः कौशल और अपस्किलिंग पहल के माध्यम से हासिल किया जा सकता है।

भविष्य के जॉब मार्केट के लिए कार्यबल को तैयार करने के लिए रीस्किलिंग और अपस्किलिंग आवश्यक है। निरंतर सीखने और नए कौशल प्राप्त करने में निवेश करके, व्यक्ति बदलते परिदृश्य के अनुकूल हो सकते हैं और उभरते अवसरों का लाभ उठा सकते हैं। आजीवन सीखना एक प्रमाण बन जाएगा, व्यक्तियों को नए उद्योगों में संक्रमण करने की आवश्यकता हो सकती है जो स्वचालन के प्रति कम संवेदनशील हैं। सरकारों, शैक्षणिक संस्थानों और संगठनों को सुलभ और किफायती पुन: कौशल कार्यक्रम प्रदान करने के लिए सहयोग करना चाहिए जो व्यक्तियों को AI -संचालन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करेंगे।

इसके अलावा, AI का उदय उद्यमशीलता और नवाचार को बढ़ावा दे सकता है। सही कौशल और ज्ञान के साथ, व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवसाय शुरू करने और नवीन उत्पाद और सेवाएं बनाने के लिए AI प्रौद्योगिकियों का लाभ उठा सकते हैं। AI का उपयोग मौजूदा प्रक्रियाओं को बढ़ाने, नए समाधान विकसित करने और आर्थिक विकास को गति देने के लिए किया जा सकता है। उद्यमिता से रोजगार सृजन भी हो सकता है, जिससे AI के कारण होने वाली संभावित नौकरी हानि को कम किया जा सकता है।

AI युग में काम के भविष्य को आकार देने में सरकारें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। वे ऐसी नीतियों को लागू कर सकते हैं जो कार्यबल के पुन: कौशल और उन्नयन का समर्थन करते हैं, व्यवसायों को जिम्मेदारी से AI प्रौद्योगिकियों में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करते हैं, और नौकरी विस्थापन से प्रभावित श्रमिकों की सुरक्षा के लिए सामाजिक सुरक्षा जाल स्थापित करते हैं। सरकारें नौकरी बाजार की जरूरतों के अनुरूप प्रासंगिक पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों और उद्योग के बीच साझेदारी की सुविधा भी प्रदान कर सकती हैं। शैक्षणिक संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे छात्रों को सक्षम बनाने के लिए अपने कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों को अनुकूलित करें।

संगठनों को अपने मौजूदा कार्यबल को फिर से प्रशिक्षित करने के लिए पुन: कौशल और उन्नयन पहल में निवेश करने की आवश्यकता है। AI द्वारा संवर्धित किए जा सकने वाले क्षेत्रों की पहचान करके और कर्मचारियों को नए कौशल हासिल करने के अवसर प्रदान करके, संगठन प्रतिभा को बनाए रख सकते हैं, उत्पादकता में सुधार कर सकते हैं और प्रतिस्पर्धी बने रह सकते हैं। अपस्किलिंग कार्यक्रमों को कार्यस्थल संस्कृति में एकीकृत किया जाना चाहिए, जिससे कर्मचारियों में निरंतर सीखने की मानसिकता को बढ़ावा मिले।

निष्कर्षत: AI का उदय नौकरी बाजार के लिए खतरे और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है। जहां नौकरी विस्थापन के बारे में चिंताएं हैं, वहीं रीस्किलिंग और अपस्किलिंग के माध्यम से नई नौकरी की भूमिकाएं और बेहतर रोजगार की संभावनाएं भी हैं। इस परिवर्तन को सफलतापूर्वक नेविगेट करने के लिए, निरंतर सीखने में निवेश करना, हितधारकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना और कार्यबल के अनुकूलन का समर्थन करने वाली नीतियां विकसित करना आवश्यक है। इन परिवर्तनों को अपनाकर, हम एक ऐसा भविष्य बनाने का प्रयास कर सकते हैं जहां ए.आई. प्रौद्योगिकी मानव क्षमता को बढ़ाएगी, जिससे एक अधिक समावेशी और समृद्ध समाज का निर्माण होगा।

हिन्दी व्यंग रचना

डॉ. पायल टंडन
धर्मपत्नी डॉ. सुगीत टंडन, चि. स. अधि.

एक बार नारद मुनि हड़बड़ाए हुए विष्णु जी के पास पहुंचे। 'नारायण नारायण' प्रभु जल्दी धरती पर चलिए। लगता है वहाँ कुछ अनर्थ हुआ है" नारद जी ने गुहार लगाई। "ऐसा क्या हुआ मुनिवर ?" विष्णु जी ने शांत स्वर मे पूछा। "भगवन् जिसे देखो गर्दन नीचे झुकाए खड़ा या बैठा है। कोई किसी से कुछ बोल नहीं रहा। कुछ तो हुआ है। "नारद जी ने चिंता जताई। विष्णु जी ने नज़रें जो धरती पर की तो देखा वाकई सब गर्दन झुकाए किसी यंत्र को हाथ में पकड़े हुए हैं और उसे अंगूठे से सहला रहे हैं। "नारद जी की बात मे दम है, पता करना चाहिए" भगवान ने माथे पर बल डालकर सोचा। "चलिए चल कर देखते हैं, प्रभु के इतना कहते ही नारद जी उनके साथ हो लिए।

ज्यों ही नीचे आए तो देखा एक आदमी हाथ हिलाता हुआ बड़बड़ाता हुआ जा रहा है। "बेचारा बहुत परेशान लग रहा है, खुद से ही बातें कर रहा है" नारद जी भर्राई आवाज मे बोले। " भले मानस,तुम्हें क्या कष्ट है ?" विष्णु जी ने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे रोका। वह आदमी कुछ नाराज दिखा और कान से कुछ निकालकर रूखे स्वर मे बोला-"हट"? फिर हाथ मे पकड़े यंत्र को जेब में रखा और प्रश्नपूर्ण निगाह से उन्हें देखा। "क्या परेशानी है तुम्हें?" नारद जी ने प्रश्न दोहराया हमें बताओ मैं नारद हूँ और ये विष्णु जी हैं। उसके अभी भी कुछ न कहने पर नारद जी कुछ हैरानी परेशानी मे बोले-"अरे मूर्ख इन्होंने दुनिया बनाई है। वे विष्णु जी की ओर इशारा करके बोले। उस आदमी ने फौरन जेब से यंत्र निकालकर अंगूठे से उसे सहलाया और आँखें गड़ाकर उसे देखते हुए बोला - दुनिया ब्रह्मा विष्णु महेश ने बनाई है। नारद जी कहाँ पीछे हटने वाले थे। उन्होंने फिर कहा अरे यही तो हैं विष्णु जी। " दुनिया एप ब्रह्मा विष्णु महेश ने बनाई है, विष्णु ने नहीं। "frauds" कह कर वह जलती आँखों से चला गया।

"जाने दीजिए प्रभु, 'परेशानियों ने बेचारे को पागल कर दिया है। आइए चलें" नारद जी बोलें। कुछ आगे चलने पर देखा ये तो सभी लोग गर्दन झुकाए अंगूठे से यंत्र सहला रहे हैं। "ये जरूर असुरों ने देवताओं के विरुद्ध कोई चाल चली है "विष्णु जी ने अपना संशय जताया और नारद जी ने फौरन हाँ मे हाँ मिलाई। "बहुत भूख लगी है भगवन, चलिए कुछ जलपान करते हैं" नारद जी ने समझाया। विष्णु जी को लगा भूखे पेट भजन ना होए, तो चलो कुछ खा कर ही असुरों के यंत्र का तोड़ निकालें। जैसे शुद्ध वैष्णो भोजन भंडार में घुसे तो फिर वही नजारा। खाना सामने और निगाहें यंत्र पर। बहरहाल वेटर ने आ कर पूछा " क्या लोगे सर" ? 'प्रभु के लिए जलपान की व्यवस्था करो' नारद जी बोले। "सिर्फ जल और पान" वेटर मूर्खतापूर्ण अंदाज मे बोला तो नारद जी ने सिर पीट लिया। नारद जी बस रो ही दिए थे कि विष्णु जी ने मुहँ में निवाला डालने वाला pose हाथ से बनाया तो वेटर बड़बड़ाता हुआ चला गया "कहाँ-कहाँ से आ जाते है"। दो मिनट में ही एक भला सा आदमी आया और पूछा "Any Problem सर"? नारद जी मिमियाए "खाना दे दो, भूख लगी है"। "पैसे हैं आपके पास?" उसने थोड़ा कड़क होकर पूछा। क्या ?" विष्णु जी बोले "Money, Paisa-Cash, Card ,UPI?" भला आदमी कड़काई से फिर बोला। अब तो नारद जी के सब्र का बांध टूट गया। वे चिल्लाए- "अरे विधाता से पैसे माँगोगे?" " ये झूठ बोल रहा है जनाब, इसका नाम विधाता नहीं, प्रभु है" वेटर बीच में कूद कर बोला। "नारायण नारायण" नारद जी रो दिए। "अब ये नारायण कौन है?" सबके हाथ यंत्र पर गए और आँखें गड़ाकर फिर कोई बोला -नारायण मूर्ति. Infosys के CEO। "क्षमा करें भगवन "इतना कह कर नारद जी ने विष्णु जी का हाथ पकड़ा और अगले ही पल वे बैकुंठ लोक में थे। दोनों ने एक एक गिलास पानी पिया। लौट के बुद्ध घर को आए वाली feeling दोनों को आई। कुछ दिनों बाद नारद जी फिर विष्णु जी को मिलने पहुंचे तो देखा लक्ष्मी जी नाराज़ बैठी हैं। आजकल विष्णु जी पता नहीं कौन-सा यंत्र लिए बैठे रहते हैं। मेरी तो कोई सुध ही नहीं "लक्ष्मी जी गुस्साई"। और नारद जी ने नारायण नारायण कह कर पतली गली से निकल जाने में ही अपनी भलाई समझी ।

पर्यटन ! अभिशाप या वरदान
एक आत्मनिरीक्षण

सोनम दावा, उप निदेशक

भारत अपने आप में एक देश नहीं है, बल्कि वह महाद्वीप को चित्रित करता है जिसमें बहुभाषी/संस्कृति/बहुधर्म और पंथ का समूह शामिल है, जिसकी अपनी परंपराएं हैं, यहां तक कि रूप और दृष्टिकोण भी जगह-जगह पर अलग-अलग हैं। अन्यथा भारत की वर्तमान 1.4 बिलियन जनसंख्या निस्संदेह दक्षिण एशिया में व्यापक पर्यटन उद्योग के लिए वरदान है। प्रकृति ने प्रचुर मात्रा में परिदृश्य के साथ-साथ गंतव्य का भी आर्शीर्वाद दिया है, चाहे वह रेगिस्तान, समुद्री तट, भू-भाग, पहाड़ियाँ, पहाड़ और भी कई परिदृश्य है जो इन आकर्षक मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्यों को देखने के लिए पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं। पर्यटन उद्योग की रुचि के कारण ही वित्तीय बेंचमार्क को ऊपर उठाने के लिए होटल/परिवहन और अन्य संबंधित एजेंसियों को शामिल किया गया है। इसके अलावा पर्यटन उद्योग के विकास के बाद सरकार का खजाना भी बढ़ रहा है और यह पाया जा रहा है कि सरकार स्वयं पर्यटन उद्योग के विकास के प्रति बहुत अधिक इच्छुक है। जुड़ाव और सक्रिय भागीदारी के कारण पर्यटन विकास के प्रति प्रत्येक हितधारक की प्रवृत्ति आजकल हर पर्यटन स्थल पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, चाहे वह उत्तरी छोर से लेकर दक्षिणी समुद्र तट तक हो या पूर्व से पश्चिम कोने तक, चाहे वह आदर्श पर्यटन स्थल हो या तीर्थयात्रा हो। इसके अतिरिक्त राजस्व संग्रह, रोजगार के अवसर और परिवहन गतिशीलता, संचार स्थापना, शहर और भवन समूह का विस्तार तेजी से बढ़ रहा है जो बढ़ता ही जा रहा है और निकट भविष्य में इसके रुकने की संभावना भी नहीं है। लाखों पर्यटक सालाना नई जगहों का आनंद लेने और उनकी खोज करने के लिए गंतव्यों का दौरा कर रहे हैं। साहसिक गतिविधि के प्रत्येक गंतव्य पर संसाधन और बुनियादी ढांचे बहुत सीमित हैं जबकि संबंधित स्थानों पर पर्यटकों के ठहराव की क्षमता असीमित नहीं है, यही कारण है कि आपूर्ति और मांग बहुत चिंताजनक रूप से असंतुलित है।

आदर्श गंतव्य और धार्मिक समारोह स्थल पर भारी संख्या में पर्यटकों की आवाजाही के बाद संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण सिक्के का दूसरा पहलू खोजना काफी गंभीर और चिंताजनक है। कूड़े के ढेर, प्लास्टिक की बिखरी वस्तुएं, चारों तरफ गंदगी, टूटे हुए शीशे, तेज ध्वनि/वायु प्रदूषण, अनियमित अनियंत्रित भीड़, शराबियों का अनियंत्रित व्यवहार और प्राकृतिक झरनों, नदी तटों और अन्य सार्वजनिक स्थानों को प्रदूषित करना, आवश्यक वस्तुओं की अपर्याप्त आपूर्ति। सार्वजनिक स्थानों पर वस्तुएं और अशोभनीय व्यवहार इन स्थलों पर प्रचलित सामान्य घटना है जो निश्चित रूप से मानवीय क्रोध और पर्यटकों के अनियंत्रित व्यवहार की वास्तविक तस्वीर को दर्शाती है। वस्तुतः ये गंतव्य पर्यटकों की भारी आमद को समायोजित करने की क्षमता के लिए पर्याप्त रूप से सुसज्जित नहीं हैं। इन गंतव्यों में इस अनियंत्रित गंदगी को ले जाने की क्षमता नहीं है जबकि संसाधन आवश्यकताएं बहुत सीमित हैं। इन आदर्श गंतव्यों की बाधाओं पर कभी ध्यान नहीं दिया गया जबकि इस संबंध में प्रभावी योजना भी कभी तैयार नहीं की गई। जाहिर है, इन कठिन कार्यों का समाधान निकट भविष्य में होता नहीं दिख रहा है, जब तक कि इन मुद्दों के खिलाफ तत्काल ठोस नीति नहीं बनाई जाती। सख्त नियम लागू करना और प्रभावी अनुशासन का माहौल बनाना महज दिखावा है क्योंकि इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकारी मशीनरी और संसाधन दोनों ही बहुत सीमित हैं। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और स्वस्थ वातावरण बनाए रखना, प्रदूषण मुक्त प्रकृति और अन्य चीजों को बरकरार रखना हमारी प्रमुख चिंता होनी चाहिए। पर्यटन स्थल पर इन विनाशकारी गतिविधियों ने हमारे सामने लाखों प्रश्न छोड़े हैं कि क्या हम अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए इन प्राकृतिक आशीर्वादों को संरक्षित करना चाहते हैं या हम अपने आने वाले भाई-बहनों को क्या संदेश देना चाहते हैं। एक बड़ा सवाल जरूर खड़ा हो गया है।

अब से इन सूचीबद्ध गंतव्यों की यात्रा के लिए विवेकपूर्ण आदर्श प्रस्ताव को फिर से तैयार करने और इस तरह की योजना बनाने की आवश्यकता है ताकि इस गंदगी का सामना करने से छुटकारा मिल सके और इन पर्यटन स्थलों पर चीजें क्रम में हों सके। इसके अलावा आत्म प्रेरणा और आत्म अनुशासन से प्रकृति को उचित सम्मान देना होगा और प्राकृतिक संसाधनों को हमेशा के लिए स्वच्छ और अक्षुण्ण बनाए रखना सुनिश्चित करना होगा। इसलिए इन आदर्श पर्यटन और औपचारिक धार्मिक स्थलों को गंदगी से मुक्त रखने में दूसरों को शिक्षित करने के लिए स्वयं प्रचार-प्रसार की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

माता-पिता
एक अविस्मरणीय सत्य

विक्रांत गोंसाई, सहायक निदेशक

माता-पिता जिन्हें भारतीय संस्कृति में ईश्वर एवं गुरु से भी श्रेष्ठ स्थान प्राप्त हैं, उन्हें ही इस युग में वैसी इज्जत, वैसा सम्मान नहीं दे पा रहे हैं जैसा आदि काल में या कलयुग से पहले दिया जाता था।

हम जैसे बच्चे माता-पिता को भी ऐसी वस्तु समझते हैं जिन्हें जब आवश्यकता हुई उपयोग किया और कार्य समाप्त हो जाने पर अपने से दूर कर दिया। जिसे हम प्रायः अवसरवादिता कहते हैं। वास्तव में हम लोग माता-पिता द्वारा हमारे लिए किए गए त्याग को, उनके द्वारा सहन किए गए दुखों को भूल जाते हैं या फिर प्रत्येक कार्य में किए गए त्याग को देख ही नहीं पाते। इसका अहसास हमें तब होता हैं जब हम स्वयं माता पिता बन जाते हैं। उस समय तो हमें ऐसा लगता है कि हम हर बात में अपने बच्चों पर अहसान कर रहे हैं या फिर बहुत बड़ा त्याग कर रहे हैं। हमें अपने माता-पिता भी याद नहीं रहते कि उन्होंने भी हमें कड़े पर्यत्नों एवं त्याग करके इतना बड़ा किया है। यदि किसी अनाथ से पूछा जाए तो वही यह सच्चाई हमारे समक्ष रख सकता हैं। उन्हें भी हमसे वही अपेक्षाएं होती है जो हमें अपने बच्चों से होती है।

यदि हम सोचें कि हर मां-बाप अपनी संतान को पालते हैं तो हमारे माता-पिता ने क्या अनोखा किया है। उन्होंने भी तो इसे केवल इसी स्वार्थ भावना के अधीन होकर यह किया होगा कि वे बुढ़ापे में अकेले न रह जाएं तो उसका उत्तर यह भी हो सकता है कि इस संसार में कोई भी व्यक्ति इस बात को निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि उसके बच्चे बुढ़ापे में उनका साथ देंगे, क्योंकि आज के समय में बहुत कम बच्चे अपने माता-पिता का साथ देते हैं। जबकि माता-पिता अपने बच्चों को प्रत्येक सुख-सुविधाएं देते हैं।

एक कृषक भी जब कृषि करता है तो उसके पीछे भी मूल भावना यही होती है कि फसल पकने पर उसे धन एवं अनाज दोनों मिलेंगे। वह कठिन परिश्रम करता है उसकी देखभाल करता है और जब फसल तैयार हो जाती है तो अपने खेतों में अपनी मेहनत का फल पाकर अत्यंत प्रफुल्लित होता है। फसल काटता है ताकि उसका विक्रय कर अपनी जीविका चला सके। परंतु कल्पना करें, यदि अचानक उसमें आग लग जाए, तो क्या होगा, उसका निवेश किया गया पैसा, परिश्रम सब समाप्त हो जाएगा।

बिल्कुल वही परिस्थिति होती है माता-पिता की भी, जब उनकी संतान उन्हें धोखा देती है। हमें ऐसे कृषक पर तो दया आती है जिसके एक वर्ष का परिश्रम व्यर्थ हो गया हो लेकिन अपने ही माता-पिता पर क्यों नहीं, जिनका सारा जीवन हमारे कल्याण पर ही व्यर्थ हो जाता है। क्या पता हमारी संतान भी हमारे साथ ऐसा करें। व्यस्क होकर हमें प्रताड़ित करें और कहे कि आपने भी तो अपने माता-पिता का सम्मान नहीं किया था।

चाहे हमारे माता-पिता हमें दुत्कारें, गालियां दें, घर से निकाल दे। यह उनका अधिकार है परंतु हमारे पास ऐसा कोई अधिकार नहीं, बल्कि इन सबके बावजूद उनकी सेवा करना, सुख देना, बुढ़ापे में उनकी लाठी बनना हमारा कर्तव्य है।

माता-पिता अपना संपूर्ण जीवन हम जैसे बच्चों पर न्यौछावर कर देते हैं, यदि हम अपने व्यस्त जीवन में से कुछ क्षण भी उन्हें दे दें तो उनका प्रत्येक त्याग सार्थक हो जाता हैं हमें उनको इज्जत करनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि बाद में हमें पछताना पड़े। एक बार गया समय लौटता नहीं हैं। आईए सोचें, समझे और व्यावहारिक बनें।

सुख

सुरिंदर कुमार, कार्यालय अधीक्षक

एक शादी-शुदा जोड़ा काफी सालों से खुश था | समय बदलने के साथ सुख की जगह दुख ने ले ली पर जोड़ा फिर से खुशी चाहता था। जब कुछ फायदा नहीं हुआ, तब जोड़े ने कुलगुरु के पास जाने का निर्णय लिया। कुलगुरु ने शादी-शुदा जोड़े की बात सुनकर एक उपाय बताया कि "आप दोनों एक संपूर्ण खुश जोड़े को खोजकर उनसे कपड़े का एक टुकड़ा लेकर आएं, तो आप दोनों को वैसा जीवन मिलेगा, जैसा आप चाहते हैं।" इस उपाय को सुनकर दोनों खुश हुए और समय भी ज्यादा नहीं लगेगा, यह सोचकर खोज मे जुट गए। उन्हें एक जोड़ा मिला, जिसके पास धन -धान्य की कमी न हो, इसलिए उन दोनों ने सबसे पहले उनसे पूछा कि क्या वे संपूर्ण रूप से खुश है ? जबाव मिला, "हाँ बिल्कुल, परंतु संतान सुख नसीब नहीं हुआ।" तब जाकर पता चला कि वे दोनों पूर्ण रूप से खुश नहीं थे। तभी आगे उन्हें बहुत धनी सेठ का जोड़ा मिला, जिसके पास धन-धान्य और संतान, दोनों थी। जोड़ा दो दिन साथ रहा तो पता चला कि धनी सेठ अपने बच्चों को संभालने में ज्यादा वक्त लगा देता है, जिससे संपूर्ण सुख भोगने को समय नहीं निकाल पाता। उन्हें निराशा हाथ लगी तथा उन्हें महसूस हुआ कि सभी के जीवन में कोई न कोई दुख है।

आखिरकार वे एक किसान दंपत्ति से मिले, जो काम करने के बाद दोपहर में खाना खा रहे थे। उन्होंने उनके चेहरे पर मुस्कान, बेफिक्री और शांति देखी, जो पहले कहीं नहीं दिखी थी। उन्हें लगा, शायद तलाश ख़त्म हो जाएगी। उन्होंने किसान दंपत्ति से पूछा। " क्या आप जीवन से खुश है ? इस प्रश्न पर किसान दंपत्ति ने कहा, "हाँ, बिल्कुल खुश।" जोड़े ने फिर से पूछा, " आप पूर्ण रूप से खुश है? जोड़े ने खुश होकर किसान दंपत्ति से कपड़े का टुकड़ा माँगा, तो मिला नहीं। अंत: में जोड़े ने समझ लिया कि संकट में कोई सहायक नहीं होता और संसार में संपूर्ण खुश कोई नहीं है। मसलन, संतान का न होना, संतानों से दुख और धन की कमी। परिणामस्वरूप सुख और दुख पूरी तरह से हमारे हाथों में है। इस प्रकार परिस्थिति के प्रति सकारात्मक विचार दुख को सुख में परिवर्तित करते है।

बाघ और बकरे की बेमिसाल दोस्ती

सुभाष चन्द्र गुप्ता
सेवानिवृत उप निदेशक

क्या शिकारी, शिकार से दोस्ती कर सकता है? क्या भक्षक, भक्ष्य का दोस्त हो सकता है? नहीं.....कतई नहीं। क्या बिल्ली की चूहे से मित्रता हो सकती है? क्या कुत्ता बिल्ली का दोस्त हो सकता है? क्या शेर हिरन का मित्र हो सकता है? नहीं...बिलकुल नहीं। अगर आपका जवाब नही है तो हम इसको हां में बदल सकते है, हां में बदलने के लिए हम बाघ और बकरे की बेमिसाल दोस्ती की दाँसता सुनने जा रहें हैं। रूस के सफारी-पार्क में एक साइबेरियन बाघ और बकरे की दोस्ती हो गई, यह सब कैसे हुआ अपने में आश्चर्यजनक है। सफारी-पार्क सें काम करने वाले लोगो ने इस बकरे को बाघ के वार्ड में उसके भोजन के लिए भेजा था. लेकिन अगले दिन बकरे को बाघ के बाड़े में भला चंगा और आराम से घास खाते देख कर सफारी-पार्क के कर्मचारी लोग आश्चर्य में पड़ गए। सफारी-पार्क में काम करने वाले लोग इस मामले को तह से समझने की कोशिश में जुट गए, जब वे इस मामले की तह तक पहुंचे तो वे आश्चर्य में पड़ गए।

सफारी-पार्क में काम करने वाले कर्मचारियों को एक आश्चर्यजनक बात पता चली कि बकरा भले ही बाघ (अमुर) की तुलना में छोटा और कमजोर था, मगर बाघ के वार्ड में जाने के बाद उससे जरा भी डरा नहीं। सफारी-पार्क के कर्मचारी अब उस बकरे को तिमुर के नाम से बुलाने लगे। तिमुर सिर्फ अमुर का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार था, बल्कि कुछ रातों के लिए उसने अमुर की माँद हथिया ली और अमुर को ठंड से अपनी माँद से बाहर सोना पड़ा। शायद अमुर को भी तिमुर की यह अदा बहुत अच्छी लगी। इस तरह वे एक दूसरे के बहुत अच्छे दोस्त बन गए। सफारी-पार्क के कर्मचारियों ने बाद में तिमुर (बाघ) को हटाना चाहा, और हटाया भी मगर अमुर (बाघ) की जिद के आगे उन्हे हार माननी पड़ी, अमुर (बाघ) रात भर गुर्राता रहा और गरजता रहा वह तभी शान्त हुआ जब सफारी-पार्क के कर्मचारियों ने उसके प्यारे दोस्त तिमुर (बकरे) को बाड़े में वापिस भेजा। अब अमुर (बाघ) अक्सर तिमुर (बकरे) के भोजन यानि घास को सूंघने लगा, और सब्जियो के सूंघता रहता था मानो वह सोच रहा हो कि अपने दोस्त का साथ देने के लिए क्या मैं शाकाहारी बन जऊ? अमुर (बाघ) तिमुर (बकरे) के लिए रखे गए नमक को भी चाटता था, जबकि नमक बकरे के खाने का हिस्सा है।

सफारी-पार्क के कर्मचारियों को बाघ और बकरे के चक्कर में अपनी साप्ताहिक छुट्टियों से भी समझौता करना पड़ता था। इन दोस्तों को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग सफारी-पार्क आने लगे। अब अमुर ने बकरा खाना बंद कर दिया है, अब उसे खाने में खरगोश दिया जाने लगा, एसा प्रतीत होता है कि उसके अंदर हुए बदलाव से उसे अमुर (बाघ) को कोई परेशानी नहीं है।

संत कवियों का सामाजिक सरोकार

कुमार रविशंकर
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संत शब्द से आशय उस व्यक्ति से है जिसने सत्य का साक्षात्कार कर लिया हो और उस सत्य में सदा तल्लीन रहता हो। संत शब्द का सामान्य अर्थ एक अच्छे व्यक्ति से भी है। भारतीय आध्यात्मिक चिंतन के मूल में भक्ति और साधना रही है। संत शब्द का विशेष अर्थ मध्यकालीन युग के संत कवियों से लिया जाता है। संत कवियों की रचना मानवता, विश्वकल्याण, त्याग, नैतिकता और जीवनमूल्यों की स्थापना हेतु प्रेरित करती आ रही है। जहां वाल्मीकि से कालीदास तक की परंपरा के कवियों ने सांस्कृतिक तथा भौगोलिक एकता कायम की वहीं मध्यकालीन संत कवियों ने साहित्य में आध्यामिक चेतना के साथ सामाजिक चेतना का भी विस्तार किया। भारतीय दर्शन, साहित्य, कला आदि के क्षेत्र में समानता, राष्ट्रीयता और भक्ति के राग सुनने को मिले। रूढ़ियों और अंधविश्वासों के विरूद्ध क्रांतिकारी संदेश दिए गए। भक्ति की धारा सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व समाज के कल्याण हेतु संदेश प्रदान किए हैं। संत कवियों के काव्य में सामाजिक मूल्यों के प्रति गहरी चिंता मिलती है। संत कवि मानवतावादी सोच के पुरोधा रहे हैं।

मधुर भावों में सूर, तुलसी, मीरा ने भगवान कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति निवेदित की है। महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में भगवान राम की भक्ति की सरिता बहायी। मीरा कृष्ण को अपना आराध्य मानती है। तुलसी, मीरा, सूर और कबीर मानो एक ही दीपक के लौ थे जिन्होंने उत्तर भारत में भक्ति का प्रकाश फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रहीम, रसखान, विद्यापति के दोहे और पदों में भक्ति-भावना के स्वर मुखरित हैं। ईश्वर भक्ति में लीन कबीर के पद ने कई सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया है। इसी तरह ज्ञानदेव, नामदेव, चैतन्य, एकनाथ, तुकाराम आदि संत कवियों ने ईश्वर पर अपने विश्वास से भक्ति की धारा प्रवाहित की। इनके दोहों और पदों से मानव जाति चेतनाशील हुआ तथा मानवता को अमर संदेश प्राप्त हुआ।

दक्षिण भारत में जन्म लेने वाले अद्वैतवाद के प्रवर्तक शंकराचार्य ज्ञानी संत कवि हुए। उन्होंने संपूर्ण भारत वर्ष को एकता के सूत्र में बांधा। शंकराचार्य ने हिंदू धर्म के देवी-देवताओं को लक्ष्य करके महत्वपूर्ण छंदों की रचना की। शंकराचार्य ने मनुष्य को सत्य से प्रेम करना सिखलाया।

हिंदी साहित्य का मध्य-युग वल्लभाचार्य के कारण स्वर्णिम हुआ। वैष्णव धर्म के आंदोलन के प्रवर्तक के रूप में उन्होंने अपना योगदान दिया। इनके द्वारा चलाए गए संप्रदाय के साथ-साथ अष्टछाप के कवियों ने पूरा योगदान दिया। बंगाल में चैतन्य महाप्रभु भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति, भजन करते अपने पदों को गाते फिरते हैं। इसी तरह संत ज्ञानेश्वर हर जीव-जंतु में ईश्वर वास समझकर प्रेम और सेवा की शिक्षा देते हैं।

श्री गुरू नानकदेव जी महाराज के श्री 'गुरूग्रंथ साहिब' में उनके कई पद हैं। इनके पदों में ज्ञान और सदाचार के संदेश हैं। उनके जीवन के तीन मूल सिद्धांत 'नाम जपो', 'कीरत करो' और 'वंड चखो' थे। उन्होंने रूढ़िवादी सोच का विरोध करते हुए सामाजिक कुरितियों पर भी प्रहार किया।

संत कवियों के द्वारा उनके दोहों, पदों और छंदों के माध्यम से दिए गए संदेश मानवता के लिए अमर संदेश हैं। इनसे ही धार्मिक, सामाजिक सुधार तथा राष्ट्रीय आंदोलन सफल हुए। मानवीय मूल्यों की स्थापना करने में आज भी ये हमारे संबल बने हुए हैं। संत कवियों की एक विशेषता थी उन्होंने जन साधारण को संबोधित किया और उसकी भाषा में अपनी बात कही। इन्होंने दीन-दुखियों के प्रति प्रेम दर्शाया। महात्मा गांधी भी गाया करते थे – वैष्णव जन तो तेणे कहिए जे पीड़ परायी जाणे रे...।

संघर्ष और जीत
सिक्के के दो पहलू

वेद प्रकाश, भेषजज्ञ

हमें अपने जीवन में बड़ी उपलब्धियां हासिल करने के लिए कई इम्तिहान देने पड़ते हैं। इन इम्तिहानों में वही कामयाब होता है जो संघर्ष से नहीं घबराते।

बाज को सबसे तेज तर्रार पक्षी माना जाता है, लेकिन अपने जीवन में उसे भी ऐसे पड़ाव से गुजरना पड़ता है, जब वह खुद को कमजोर, निस्सहाय और हारा हुआ मानने लगता है। बाज एक ऐसा पक्षी है, जो सत्तर से सौ साल तक जीवित रहता है। लेकिन चालीस की उम्र तक आते-आते उसके कंधे बिल्कुल कमजोर हो जाते हैं और उड़ान भरने में दिक्कत करने लगते हैं। इस अवस्था में उसकी चोंच जो कभी बहुत तीखी और नुकीली थी वह मुड़ने लगती है। यही वह समय होता है, जब उसके पास दो ही विकल्प बचते हैं। पहला चुपचाप मृत्यु के आगोश में चला जाए या फिर दोबारा जीवन को धारण कर फिर से खुले आसमान में उड़ान भरें। बाज हार नहीं मानता, वह जीवन की खोज में किसी बड़ी दुर्गम चट्टान पर पहुंच जाता है। वहीं अपना घोंसला बनाकर रहने लगता है। वह दिन-रात चट्टान पर अपनी चोंच मारता है जब तक कि वह टूट नहीं जाती। इस प्रक्रिया में बाज का पूरा शरीर क्षत-विक्षत हो जाता है। उसे पहले जैसी अवस्था पाने के लिए पांच महीने का इंतजार करना पड़ता है। बस इस उम्मीद के सहारे की समय बीतते ही वह पहले जैसा हो जाएगा। वह फिर से उड़ पाएगा, शिकार कर पाएगा। बड़े कड़े और कष्टदायी इम्तिहान से गुजरने के बाद वह तीस साल और जीवित रहता है। अतः जीवन में आने वाली किसी भी परेशानी का डटकर सामना किया जाए, तो वह समस्या आपकी कामयाबी की राह में बाधक नहीं बन सकती है। जिंदगी में धीरे चलकर भी कभी न रूकें, तो यकीन मानिए आप सबसे तेज चल रहे हैं। और अंत में जीत निश्चित आपकी ही होगी।

"अनमोल वचन"

1. सदैव सकारात्मक सोच रखना
2. सदैव क्रोध पर अंकुश रखना
3. सदैव सामूहिक हितों लिए व्यक्तिगत हितों का त्याग करना
4. सदैव चिन्ता को हटाकर चिन्तन करना
5. वैर वैमनस्य को भुला कर त्याग एव प्रेम में विश्वास रखना
6. अपने नैतिक मूल्यों को कभी गिरने ना देना
7. राष्ट्रप्रेम को सर्वोपरि मानना
8. ध्यानयोग के द्वारा आत्ममंथन करना
9. माता , पिता, गुरु, प्रभु के वचनों में बिना तर्क विश्वास रखना
10. सदैव गुण ग्राहक बनना
11. सदैव मित भाषी एव मृदु भाषी बनना

जयंक आहूजा
अवर श्रेणी लिपिक

खुशी का अर्थशास्त्र

परगट सिंह, उप निदेशक

ऐसा प्रतीत होता है कि इस दुनिया में धन संचय करने का जुनून सवार है और धन संचय करने की इस जुनूनी दुनिया में, खुशी की तलाश अक्सर पीछे छूट जाती है। लेकिन क्या होगा अगर मैं आपसे कहूं कि ये दोनों एक आदर्श गीत की तरह जुड़े हुए हैं? खुशी के अर्थशास्त्र में आपका स्वागत है, जहां पैसे और खुशी के बीच का संबंध जटिल और आकर्षक दोनों है।

इसकी कल्पना करें: एक हलचल भरी शहर की सड़क, जिसमें बहुत सारी गतिविधियाँ हों। और लोग सफलता और समृद्धि की तलाश में इधर-उधर भाग रहे फिर भी, इस अराजकता के बीच, एक अलग कहानी है - एक कहानी जो बताती है कि सच्ची खुशी बैंक बैलेंस में नहीं, बल्कि जीवन और रिश्तों के अनुभवों में मिल सकती है।

सकारात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान इस धारणा को स्थापित करता है, यह सुझाव देता है कि एक निश्चित आय सीमा से परे, अतिरिक्त धन खुशी को बढ़ाने में बहुत कम योगदान देता है। ईस्टरलिन पैराडॉक्स के रूप में जानी जाने वाली यह घटना बताती है कि पैसे से आराम और सुरक्षा तो खरीदी जा सकती है, लेकिन स्थायी खुशी पैदा करने की इसकी क्षमता सीमित है। तो, वित्तीय साधनों से परे कौन से कारक वास्तविक खुशी में योगदान करते हैं? आइए मानव व्यवहार और पसंद के माध्यम से एक यात्रा शुरू करें।

सबसे पहले, खर्च करने की आदतों पर विचार करें - रोजमर्रा के लेन-देन जो हमारे जीवन को आकार देते हैं। जबकि हम अस्थायी सुख की तलाश में भौतिक संपत्ति का अनुसरण करते हैं, अध्ययनों से पता चलता है कि अनुभवों/रिश्तों में निवेश करने से दीर्घकालिक संतुष्टि मिलती है। चाहे वह प्रियजनों के साथ स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेना हो या किसी रोमांचकारी साहसिक यात्रा पर जाना हो, यादें भौतिक संपदा से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

इसके अलावा, वित्तीय प्राथमिकताओं की अवधारणा खुशी के समीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उपभोक्तावाद से ग्रस्त दुनिया में चाहतों और जरूरतों के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण हो जाता है। व्यक्तिगत मूल्यों और आकांक्षाओं के साथ खर्च करने की आदतों को जोड़कर, व्यक्ति उद्देश्य और पूर्ति की भावना प्राप्त कर सकते हैं जो महत्वपूर्ण मौद्रिक संपत्ति है। फिर भी, शायद ख़ुशी का सबसे गहरा प्रभाव जीवन विकल्पों के क्षेत्र में निहित है। कैरियर पथ से लेकर रिश्तों तक, हमारा हर निर्णय हमारी भलाई को आकार देने की क्षमता रखता है। काम और आराम के बीच संतुलन बनाना, सार्थक संबंध बनाना और आत्म-देखभाल को प्राथमिकता देना एक पूर्ण जीवन जीने के सभी महत्वपूर्ण घटक हैं।

इसके अलावा, उन सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभावों को स्वीकार करना आवश्यक है जो खुशी के बारे में हमारी धारणाओं को आकार देते हैं। भौतिकवाद और तुलना के प्रभुत्व वाली दुनिया में, इस भ्रम में पड़ना आसान है कि धन का अर्थ सफलता और संतुष्टि है। समृद्धि और कल्याण के अधिक समग्र दृष्टिकोण को अपनाने से, हम अधिक संतुष्टिदायक अस्तित्व का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

निष्कर्षतः, ख़ुशी के अर्थशास्त्र में खर्च करने की आदतें, वित्तीय प्राथमिकताएँ और जीवन विकल्प शामिल हैं। जबकि पैसा निर्विवाद रूप से आराम और सुरक्षा प्रदान करने में भूमिका निभाता है, इसका असली मूल्य हमारे अनुभवों और रिश्तों की गुणवत्ता को बढ़ाने की क्षमता में निहित है। कृतज्ञता, सचेतनता और उद्देश्य में निहित मानसिकता को अपनाने से, हम खुशी की सच्ची मुद्रा को अनलॉक करते हैं - एक अमूल्य खजाना जो भौतिक धन की बाधाओं को पार करता है।

याद रखें कि खुशी का मार्ग धन से नहीं बल्कि हंसी, प्यार और जुड़ाव के क्षणों से तय होता है। मानवीय अनुभव की समृद्धि को अपनाएं, क्योंकि समृद्धि का असली सार इसी में निहित है।

एसिक पखवाड़ा

सुविधा समागम

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के साथ कनवर्जेंस बैठक

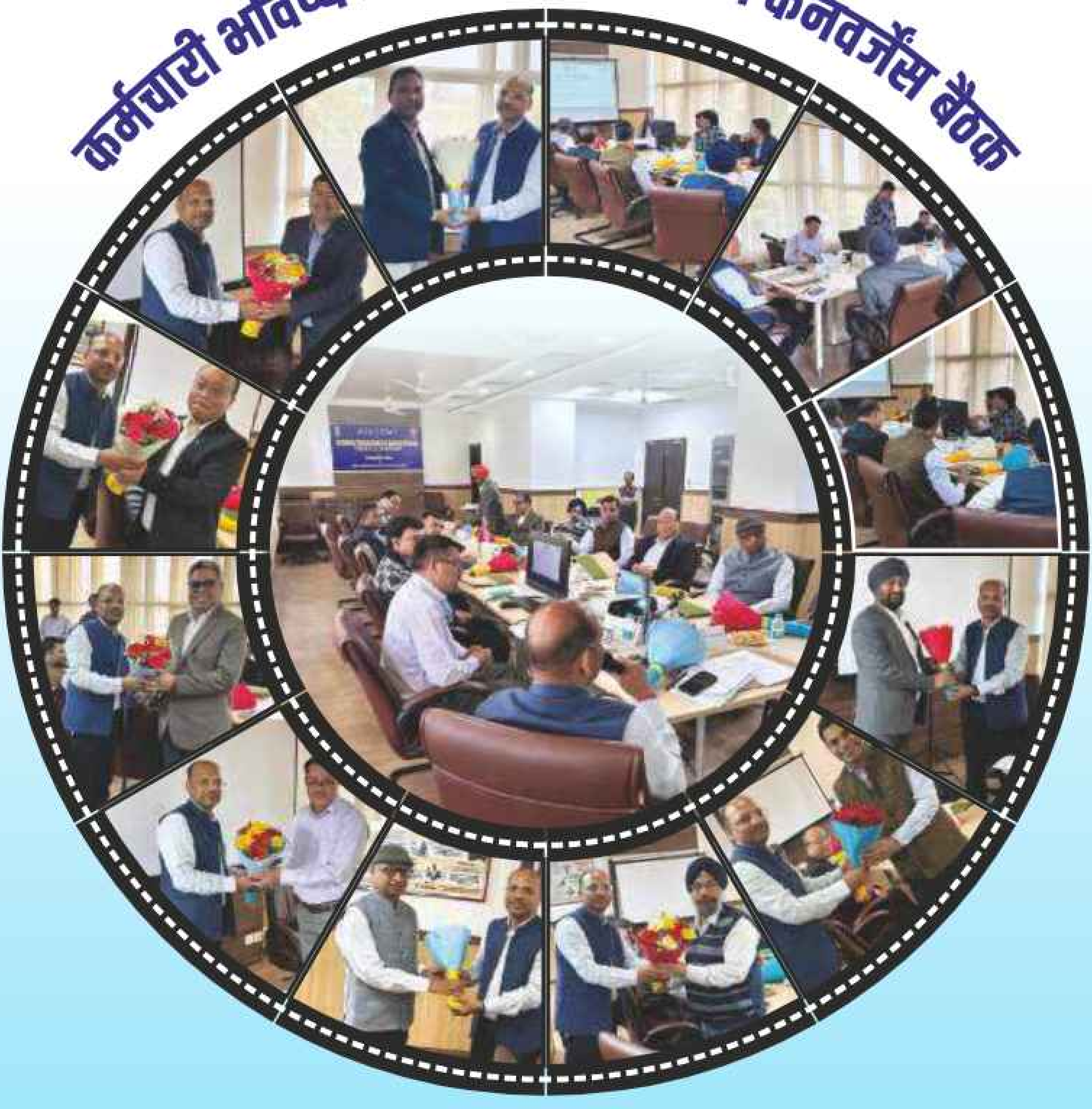

हिंदी कार्यशाला

राजभाषा नीति को सुचारू रूप से कार्यान्वित करने के लिए राजभाषा हिंदी कार्यशाला का विशेष स्थान है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय के दिशानिर्देशों के अनुसरण में क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ में प्रत्येक तिमाही में एक दिवसीय पूर्णकालिक राजभाषा हिंदी कार्यशाला का

आयोजन किया जाता है। हिंदी कार्यशाला में कार्मिकों को संघ की राजभाषा नीति, टिप्पण व आलेखन एवं यूनीकोड विषय के साथ-साथ कर्मचारी राज्य बीमा निगम की कार्यप्रणाली से जुड़े अन्य विषयों से संबंधित विषयों पर व्याख्यान दिए जाते हैं तथा टिप्पण एवं आलेखन का अभ्यास कराया जाता है। कार्यशालाओं में विभिन्न विषयों पर हिंदी में टिप्पणियां लिखने तथा मसौदा लेखन के अभ्यास से कार्मिकों के हिंदी में कार्य करने की झिझक को दूर करने का प्रयास किया जाता है।

खेल के मैदान से

"जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा (हिन्दी) में नहीं चलता तब तक हम यह नहीं कह सकते कि इस देश में स्वराज्य है." - मोरारजी देसाई

निधि आपके निकट

मनोरंजन क्लब

"किसी राष्ट्र की राजभाषा वही भाषा हो सकती है जिसे उसके अधिकाधिक निवासी समझ सके।"

महिला दिवस 2024

विराकास

शाखा कार्यालय

रोजगार मेला

हिंदी दिवस

राजभाषा पखवाड़ा एवं राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह

राजभाषा पखवाड़ा का प्रारंभ 14-15 सितंबर, 2023 को पुणे में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में आयोजित हिंदी दिवस समारोह से हुआ जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ से सहायक निदेशक (राजभाषा) उक्त सम्मेलन में शामिल हुए।

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया-

हिंदी निबंध प्रतियोगिता
21.09.23

हिंदी वाक्
22.09.23

हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता
25.09.23

राजभाषा ज्ञान
26.09.23

दिनांक 29.09.23 को राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया।

26 जनवरी गणतंत्र दिवस

बीमा आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ दौरा

कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने सफाई अभियान चलाया

चंडीगढ़ (वि)। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत विशेष सफाई अभियान चलाया जा रहा है। इस दौरान पंजाब राज्य में क्षेत्रीय कार्यालय की विभिन्न शाखा कार्यालयों द्वारा स्वच्छता ही सेवा का अनुसरण करते हुए सफाई अभियान चलाया गया। सेक्टर-30 स्थित निगम के क्षेत्रीय परिसर में निगम के आंचलिक बीमा आयुक्त रमेश कुमार गौतम के नेतृत्व में विशेष सफाई अभियान चलाया गया। इस अभियान के दौरान निगम के अधिकारी पंकज सेहरा उपनिदेशक एवं संगम दास उपनिदेशक भी उपस्थित रहे।

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम 2024-25

प्राक्कथन

दिनांक 18 जनवरी, 1968 को संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प में यह व्यक्त किया गया है कि:-

1. "यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए गए उपायों एवं की गई प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखी जाएगी और सभी राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।"

2. उक्त संकल्प के उपबंधों के अनुसरण में राजभाषा विभाग द्वारा प्रति वर्ष केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा हिंदी के प्रसार और प्रगामी प्रयोग हेतु वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है। वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम इसी क्रम में जारी किया जा रहा है। हिंदी बोले जाने और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों / संघ राज्य क्षेत्रों को तीन क्षेत्रों में चिह्नित किया गया है। इन तीनों क्षेत्रों यथा 'क', ख' और 'ग' का विवरण निम्नानुसार है:-

क्षेत्र	क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्र
क	बिहार, छत्तीसगढ, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।
ख	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।
ग	'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र

3. सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग उतरोत्तर बढ़ रहा है किंतु अभी भी काफी काम अंग्रेजी में हो रहा है। राजभाषा नीति का उद्देश्य है कि सरकारी कामकाज में सामान्यतः हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हो। यही भारतीय संविधान की मूल भावना के अनुरूप होगा। कहने की आवश्यकता नहीं है कि जन साधारण की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति तेज होगी और प्रशासन में पारदर्शिता आएगी।

4. **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के कुशल तथा प्रेरणादायक नेतृत्व में राजभाषा विभाग ने निम्नलिखित ई-लर्निंग कार्यकलापों की शुरुआत की है:-**

(क) राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण संस्थान- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान ने आवश्यकतानुसार इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफार्मों (ई-प्रशिक्षण) के माध्यम से भी हिंदी भाषा/हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षण देना प्रारंभ कर दिया है।

(ख) राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों ने आवश्यकतानुसार डिजिटल प्लेटफार्मों (ई-निरीक्षण) के माध्यम से भी वर्चुअल निरीक्षण करना प्रारंभ कर दिया है।

(ग) हिंदी कार्यशालाओं और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की बैठकों का आयोजन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के साधनों (ई-बैठक) के माध्यम से भी किया जा रहा है।

(घ) केंद्र सरकार के विभिन्न संगठनों की गृह पत्रिकाओं के सहज तथा सुलभ पठन के लिए राजभाषा विभाग की आधिकारिक वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म की शुरुआत की गई है।

5. तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन दिनांक 14-15 सितंबर, 2023 को श्री छत्रपति शिवाजी क्रीडा संकुल, बालेवाड़ी, पुणे (महाराष्ट्र) में किया गया। इसका उद्घाटन माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा, राज्य सभा के उप सभापति माननीय श्री हरिवंश, केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री डॉ. भारती प्रवीण पवार, केंद्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम राज्य मंत्री श्री भानुप्रताप सिंह वर्मा, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष माननीय श्री भर्तृहरि महताब एवं अन्य माननीय सदस्यगणों की उपस्थिति में किया गया।

इस अवसर पर, भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों के सचिव, विभिन्न बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के

उच्चाधिकारी और देश भर से आए हिंदी विद्वानों सहित भारत सरकार के नौ हजार से अधिक अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने वीडियो संदेश के माध्यम से सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दीं। इसी अवसर पर मंचासीन अतिथियों द्वारा सरकारी कामकाज में कंठस्थ 2.0 टूल का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में काम करते हुए ई- ऑफिस में कंठस्थ 2.0 टूल के एकीकरण की शुरूआत की गई। अब ई-ऑफिस में काम करते हुए वहीं पर इस टूल की सहायता से त्वरित अनुवाद (Instant Translation) प्राप्त किया जा सकता है और फाइल में उसका प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही, हिंदी शब्द सिंधु संस्करण 2 हिंदी शब्दकोश (3,51,000 शब्दों के साथ नवीन संस्करण) को भी लोकार्पित किया गया। उपर्युक्त के अतिरिक्त राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी नियम-पुस्तक के नवीन संस्करण का भी भव्य लोकार्पण किया गया।

6. वर्तमान युग में कोई भी भाषा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से जुड़े बिना नहीं पनप सकती। यह स्पष्ट है कि वर्तमान समय में केंद्र सरकार के कार्यालयों में कंप्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट सहित सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाएं उपलब्ध होने से वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना और भी आसान हो गया है। राजभाषा विभाग निरंतर इस दिशा में काम कर रहा है। इसी क्रम में पुणे (महाराष्ट्र) में 14-15 सितंबर, 2023 को सम्पन्न हुए हिंदी दिवस और तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा तथा मंचासीन अतिथियों द्वारा 'हिन्दी शब्द सिंधु- संस्करण-2 एक बृहत् एवं समावेशी शब्दकोश तथा 'कंठस्थ 2.0 (अनुवाद टूल) के ई-ऑफिस के साथ एकीकृत संस्करण का लोकार्पण किया गया।

(i) 'हिन्दी शब्द सिंधु बृहत् शब्दकोश देश की अन्य भाषाओं से हिंदी को समृद्ध करने की दिशा में विकसित किया जा रहा है। इसमें विभिन्न विषयों- जनसंचार, आयुर्वेद, खेलकूद, अंतरिक्ष विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, वैमानिकी, कंप्यूटर विज्ञान, इलैक्ट्रॉनिक्स, भू-गर्भशास्त्र, मानविकी आदि से संबंधित शब्दावली के साथ-साथ पारंपरिक शब्दावली को भी समाहित किया जा रहा है। इस शब्दकोश में शब्द की प्रविष्टि के साथ-साथ उसकी व्याकरणिक कोटि, अर्थ, पर्याय, आवश्यकतानुसार प्रयोग, विलोम, मुहावरे एवं तत्संबंधी अन्य आवश्यक जानकारियाँ दी गई है। यह शब्दकोश पूर्णतया डिजिटल तथा खोजपरक (सर्चेबल) है। यह एक ऐसा शब्दकोश होगा जो पूर्णतः अद्यतन और समावेशी होगा तथा इसमें हिंदी में प्रयुक्त होने वाले सभी शब्दों का अर्थ सहित संग्रह होगा। इस शब्दकोश में हिंदी और हिंदी क्षेत्र की बोलियों, उपभाषाओं और भाषाओं के शब्द, अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्द, मीडिया और न्यू मीडिया के शब्द, तकनीक और विज्ञान के शब्द तथा विधि एवं न्याय के शब्द भी शामिल किए जा रहे हैं। यह पूर्णतया डिजिटल वेब आधारित होगा तथा इसे केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानकीकृत वर्तनी के अनुसार तैयार किया जा रहा है। इसमें यूनिकोड फॉन्ट का उपयोग किया जा रहा है तथा इसमें हिंदी, अंग्रेजी में टंकण कर शब्द खोजने की सुविधा होगी।

(ii) "कंठस्थ 2.0" (अनुवाद सारथी) के इस अद्यतन संस्करण में तीन नई विशेषताएं शामिल की गई हैं जिससे यह अब बेहद उपयोगी सॉफ्टवेयर बन गया है। ये फीचर इस प्रकार हैं :-

न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन अर्थात मशीनी अनुवाद- इस सुविधा के अनुसार अब यह न केवल अपनी मेमोरी (जिसमें इस समय करीब 25 लाख वाक्य हैं) से अनुवाद देगा बल्कि मशीनी अनुवाद भी उपलब्ध कराएगा।

स्मार्ट चैटबोट- यह May I Help You की तरह है। इसमें नए प्रयोक्ता के लिए बहुत सारे प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दिए गए हैं। आप इन्हें एक प्रकार से "FAQs" या "अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न" कह सकते हैं। इनसे प्रयोक्ताओं को कंठस्थ का प्रयोग करने में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी।

वॉयस टाइपिंग -अब इस सॉफ्टवेयर में टाइपिंग करने के लिए वॉयस टाइपिंग की सुविधा भी उपलब्ध करा दी गई है। प्रयोक्ता बोलकर भी टाइप कर सकते हैं।

7. **वार्षिक कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित बिंदु विशेष रूप से विचारणीय हैं:-**

(i) राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के बारे में सरकार की नीति यह भी है कि सरकारी कामकाज में हिंदी को प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना से बढ़ाया जाए। लेकिन इसके साथ ही नियमों और आदेशों के अनुपालन में दृढ़ता बरती जानी चाहिए। इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के तहत केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित अनुपालन हो। यदि कोई कर्मचारी या अधिकारी जानबूझकर राजभाषा के

बारे में लागू प्रावधानों की अवहेलना करता है तो प्रकरण से संबंधित नियमों एवं आदेशों के उल्लंघन के आधार पर कार्रवाई की जा सकती है।

(ii) यह आवश्यक है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के नौ खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए।

(iii) संबंधित मंत्रालय/विभाग वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाने के लिए आवश्यक कदम उठाएं और उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने के लिए आवश्यक उपाय करें।

(iv) हिंदी भाषा, हिंदी टंकण/आशुलिपि के प्रशिक्षणों में न केवल तेजी लाई जाए बल्कि प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके सभी कार्मिकों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण/आशुलिपि का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रेरित एवं निर्देशित भी किया जाए।

(v) राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में केंद्र सरकार के कार्यालय नियमित रूप से अपने कर्मचारियों को नामित करें और नामित कर्मचारियों को निदेश दें कि वे नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहें और पूरी तत्परता से प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा परीक्षाओं में बैठें। प्रशिक्षण को बीच में छोड़ने या परीक्षाओं में न बैठने वाले मामलों में कड़ाई बरती जाए।

(vi) केंद्र सरकार के कार्यालय केंद्रीय सेवाओं के अपने प्रशिक्षण संस्थानों में राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था उसी स्तर पर करें जिस स्तर पर लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में कराई जाती है और अपने विषयों से संबंधित साहित्य का सृजन हिंदी में करवाएं ताकि प्रशिक्षण के बाद अधिकारी सरकारी कामकाज सुविधापूर्वक राजभाषा हिंदी में कर सकें। इस वार्षिक कार्यक्रम में "क", 'ख' व 'ग' क्षेत्र के लिए केंद्र सरकार के सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अनिवार्यतः हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण दिए जाने हेतु लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। इस संबंध में अनुपालन हेतु संबंधित प्रशिक्षण केंद्रों को आवश्यक दिशा निर्देश जारी किए जाने की आवश्यकता है।

(vii) प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला का आयोजन कर सभी कार्मिकों को राजभाषा नीति की जानकारी दी जाए जिससे वे अपने दायित्वों को अच्छी तरह निभा सकें।

(viii) केंद्र सरकार के कार्यालय अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियां हिंदी माध्यम में आयोजित करें।

(ix) यह सुनिश्चित किया जाए कि हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीतने वाले अधिकारी/कर्मचारी अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करें।

(x) मंत्रालयों/विभागों के संबंधित अधिकारियों व वरिष्ठ अधिकारियों (उप सचिव/निदेशक/संयुक्त सचिव) द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों का समय-समय पर राजभाषा संबंधी निरीक्षण राजभाषा अनुभाग के अधिकारियों के साथ किया जाए।

(xi) देश भर में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) हेतु राजभाषा विभाग द्वारा संयुक्त नराकास वेबसाइट (http//narakas.rajbhasha.gov.in) का निर्माण किया गया है। सभी नराकास इस वेबसाइट पर अपना नराकास संबंधी डाटा (सूचना) साझा करें। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का उद्देश्य केंद्र सरकार के देश भर में फैले कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान करना है। इस मंच पर नराकास के सदस्य हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए उनके द्वारा अपनाई गई उत्तम नीतियों के बारे में जानकारी पर विचार- विमर्श करके तथा उसका आदान-प्रदान करके अपनी उपलब्धियों के स्तर में सुधार ला सकते हैं। समिति की वर्ष में दो बैठकें आयोजित की जाती हैं। नगर विशेष में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के प्रशासनिक प्रमुखों द्वारा इस समिति की बैठकों में व्यक्तिगत तौर पर सहभागिता करना अपेक्षित है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के द्वारा प्रशासनिक प्रमुखों को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और इस संबंध में समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी आदेशों के अनुपालन का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। राजभाषा विभाग (मुख्यालय) / क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों के अधिकारी इन बैठकों में भाग लेते हैं। नराकास की बैठकों में विचारार्थ बिंदुओं की चेक लिस्ट नराकास के गठन के समय आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने हेतु उपलब्ध कराई जाती है। राजभाषा विभाग द्वारा अब तक कुल 531 नराकास का गठन किया जा चुका है।

(xii) देश के उन शहरों में नराकास के गठन के नियमानुसार प्रयास किए जायें जहां अभी तक नराकास का गठन नहीं हुआ है।

(xiii) तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के 30 दिनों के भीतर राजभाषा विभाग को ऑनलाइन उपलब्ध करा दी जाए। इसी प्रकार, वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट प्रत्येक वर्ष 30 जून तक अवश्य उपलब्ध करा दी जाए। केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों से अपेक्षित है कि तिमाही प्रगति रिपोर्ट व वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट ऑनलाइन ही भेजें। यह प्रणाली विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

(xiv) मंत्रालय/विभाग अपने यहां हिंदी सलाहकार समितियों का गठन/पुनर्गठन कर उनकी बैठकें नियमित आधार पर करना सुनिश्चित करें। इन बैठकों में माननीय सदस्यों के विचारार्थ राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण बिंदुओं की चेक लिस्ट को ध्यान में रखा जाए। यह चेक लिस्ट राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है। इन बैठकों में लिए गए निर्णयों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

(xv) केंद्र सरकार के कार्यालयों आदि द्वारा जो भी विज्ञापन अंग्रेजी/क्षेत्रीय भाषाओं में दिए जाते हैं, उन्हें हिंदी भाषा में भी अनिवार्य रूप से प्रकाशित कराया जाए। जब अंग्रेजी समाचार पत्रों में विज्ञापन दिए जाते हैं तो विज्ञापन के अंत में यह अवश्य उल्लेख कर दिया जाए कि अधिसूचना/विज्ञापन/रिक्ति संबंधी परिपत्र का हिंदी रूपांतर वेबसाइट पर उपलब्ध है। इस जानकारी संबंधी पूरा लिंक भी दिया जाए।

(xvi) केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी कंप्यूटरों में यूनिकोड की सुविधा हो ताकि उन पर हिंदी में काम किया जा सके।

(xvii) यह भी सुनिश्चित किया जाए कि अनुवाद कार्य से जुड़े सभी अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा विभाग द्वारा विकसित कराए गए 'कंठस्थ सॉफ्टवेयर/टूल का अधिक से अधिक उपयोग करें तथा बार-बार किए जाने वाले कार्यों को इसमें फीड करें।

(xviii) शिक्षा मंत्रालय के केंद्रीय हिंदी संस्थान और सी-डैक, पुणे के सहयोग से 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' को उन्नत करने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। हिंदीतर भाषा-भाषी लोगों द्वारा इसका अधिकाधिक प्रयोग किया जाए।

(xix) विदेशों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। अभी वर्तमान में पांच देशों:-मॉरीशस (पोर्ट लुई), संयुक्त अरब अमीरात (दुबई), यूनाइटेड किंगडम (लंदन), फिजी तथा सिंगापुर में नराकास गठित हैं।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि सभी केंद्रीय मंत्रालय/विभाग, कार्यालय, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक एवं केंद्रीय उपक्रम आदि राजभाषा प्रयोग संबंधी संवैधानिक और सांविधिक दायित्वों के अनुरूप अपने दैनिक काम-काज में हिंदी पर अधिकाधिक बल देंगे और वर्ष 2024-25 के वार्षिक कार्यक्रम में उल्लिखित लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में स्वैच्छिक प्रयास करेंगे।

मार्च, 2024

(अजय कुमार मिश्रा)
गृह राज्य मंत्री गृह मंत्रालय,
भारत सरकार

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें व सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी, दोनों में जारी किए जाएं। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित अथवा जारी किए जाएं।

2. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है।

3. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10 (4) के अनुसार केंद्र सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कार्मिकों ने हिंदी का

कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएं। इसके अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं:-

"ग्राहकों द्वारा हिंदी में भरे गए आवेदनों और अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर ग्राहकों की सहमति से जारी किए जाने वाले मांग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, सभी प्रकार की सूचियां, विवरणियां, सावधि जमा रसीदें, चैक बुक संबंधी पत्रादि, दैनिक बही, मस्टररोल, प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा एवं ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, नये खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, चिकित्सा संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि।"

4. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अनुसार केंद्र सरकार, ऐसे अधिसूचित कार्यालयों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को टिप्पण, प्रारुपण और अन्य उन शासकीय कार्यों को केवल हिंदी में करने के लिए आदेश जारी कर सकती है, जो कि आदेश में विनिर्दिष्ट हों।

5. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी और मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी। तदनुसार, केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा है कि वे सभी मैनुअल, संहिताएं एवं प्रक्रिया संबंधी असांविधिक साहित्य से संबंधित अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य अनुवाद के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में भेजें।

6. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमावली के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन से उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए जाएं।

7. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने केंद्रीय हिंदी समिति की 31 वीं बैठक के कार्यवृत्त में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सुझावों पर पुनः बल दिया है। ये सुझाव हैं:- सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करना, देश की दूसरी भाषाओं से हिंदी को और समृद्ध करने के लिए उपाय करना, दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करना, दूसरी भारतीय भाषाओं से अच्छे शब्दों को खोजकर हिंदी भाषा में जोड़ना, हिंदी में अनुवाद सरल भाषा में सुनिश्चित करना जिससे सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधक नहीं, सहायक हो।

8. राजभाषा विभाग ने भारत सरकार के सभी सचिवों/विभिन्न सरकारी संगठनों के प्रमुखों से आग्रह किया है कि जब वे प्रत्येक माह वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करें तो वे उनमें हिंदी में सरकारी काम- काज में हुई प्रगति की भी समीक्षा करें और अपने संगठन में राजभाषा अधिनियम तथा नियमों के विभिन्न उपबंधों के कार्यान्वयन के बारे में चर्चा करें। साथ ही, संयुक्त सचिव (प्रशासन) / संगठन के प्रशासनिक प्रमुख को हिंदी कार्यान्वयन तथा वर्ष की प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वियन समिति की बैठक की अध्यक्षता करने का उत्तरदायित्व सौंपा जाए।

9. कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा का संवर्ग गठित होना चाहिए, जो कि कुल पदों के अनुरूप हो। मंत्रालयों/विभागों के अधीनस्थ कार्यालयों के हिंदी पदाधिकारियों को केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के समान वेतनमान व पदनाम दिए जाएं।

10. अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्न-पत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्न- पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्न-पत्र द्विभाषी रूप से, हिंदी तथा अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। साक्षात्कार या मौखिक परीक्षा में उम्मीदवारों को हिंदी में उत्तर देने की छूट दी जाए।

11. केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा सभी सेवाकालीन, विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं (अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षाओं सहित) में अभ्यर्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में देने का विकल्प दिया जाए। प्रश्न पत्र अनिवार्यतः दोनों भाषाओं, हिंदी और अंग्रेजी, में तैयार कराए जाएं। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां अभ्यर्थियों को पूछे गए प्रश्नों का उत्तर हिंदी में देने की अनुमति दी जाए।

12. सभी प्रकार की वैज्ञानिक तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने

के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र संबंधित मंत्रालय/विभाग और कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित हों।

13. केंद्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि हिंदी संगोष्ठियों का आयोजन करें।

14. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यतः हिंदी माध्यम से हो। 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षणार्थी की मांग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए।

15. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा कोई भी गैर सरकारी संस्था केंद्र सरकार के कर्मचारियों को राजभाषा का प्रशिक्षण देने देने के लिए अधिकृत नहीं की गई है। राजभाषा विभाग के अंतर्गत प्रशिक्षण केंद्र पहले से ही देश भर में काम कर रहे हैं जो केंद्र सरकार के अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण निःशुल्क देते हैं एवं राजभाषा पर विचार-विमर्श के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं। राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा संबंधित कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर 'लीला' राजभाषा के माध्यम से अंग्रेजी के अतिरिक्त 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण ऑनलाइन दिए जाने की सुविधा उपलब्ध है। अतः गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जा रहे राजभाषा के प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए सरकारी कोष से अनावश्यक धन खर्च करना उचित नहीं है।

16. विभिन्न कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के संबंध में नए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। नए दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यशाला की न्यूनतम अवधि एक कार्य दिवस की होगी। कार्यशाला में न्यूनतम दो तिहाई समय कार्यालय से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करवाने में लगाया जाए।

17. केंद्र सरकार के कार्यालयों की मांग पर केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से भी हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

18. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंककों व हिंदी आशुलिपिकों से संबंधित निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं।

19. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा अनुवाद कार्य के लिए किया जा सकता है।

20. अनुवादकों को, मानक शब्दकोश (अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियों के रूप में सहायक सामग्री उपलब्ध कराई जाए।

21. भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि सरकारी कामकाज में वे इसका प्रयोग कर सकें। तथापि, अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता। परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाता। केंद्र सरकार के कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वे सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन में गति आएगी।

22. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में भी व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

23. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय अपने दायित्वों से संबंधित विषयों से संबधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

24. केंद्र सरकार के कार्यालय अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे

हैं। इन पत्रिकाओं में कार्यालय की सामान्य गतिविधियों तथा उस कार्यालय के कामकाज से संबंधित मौलिक आलेख प्रकाशित किए जाएं। साथ ही राजभाषा नीति के प्रमुख प्रावधानों का भी उल्लेख अवश्य हो। केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन पत्रिकाओं के ई- वर्जन तैयार करें और इन्हें राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए प्लेटफॉर्म "ई-पत्रिका पुस्तकालय" पर अपलोड करें ताकि गृह-पत्रिकाएं पाठकों को सहज तरीके से प्राप्त हो सकें।

25. यह देखा गया है कि अनेक विभागों द्वारा वेबसाइट पर या तो सूचना हिंदी में नहीं दी जाती या कुछ मामलों में यह पूर्णतया हिंदी में उपलब्ध नहीं है। अतः वेबसाइट हिंदी में विकसित और नियमित रूप से अद्यतित करवाएं।

26. राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से हर वर्ष कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए 5 दिवसीय बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अधिक से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को नामित करें। प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने के बाद प्रशिक्षु कंप्यूटर पर हिंदी में काम कर सकेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की वेबसाइट www.chti.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

27. राजभाषा विभाग द्वारा मौलिक रूप से हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "राजभाषा गौरव पुरस्कार" दिए जाते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2022- 23 से संशोधित "राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना" लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत अब भारत के नागरिकों को निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे:-

(क) हिंदी में ज्ञान-विज्ञान संबंधी मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(ख) न्यायालयिक विज्ञान, पुलिस, अपराधशास्त्र अनुसंधान और पुलिस प्रशासन पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(ग) संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर आदि पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(घ) विधि के क्षेत्र में हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करने वाले मंत्रालय/विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, बोर्ड / स्वायत्त निकाय / ट्रस्ट आदि, राष्ट्रीयकृत बैंक तथा हिंदी गृह पत्रिकाओं के लिए "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" राजभाषा विभाग द्वारा दिए जाते हैं। इन दोनों पुरस्कार योजनाओं की जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

28. राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट पर विभिन्न संस्थाओं के लिंक उपलब्ध कराए हैं जिनके माध्यम से इन संस्थाओं की शब्दावली देखी जा सकती है। इस संबंध में यदि कार्यालयों द्वारा कोई अपनी शब्दावली तैयार की गई है तो वे उसे राजभाषा विभाग से साझा करें ताकि अन्य कार्यालय भी लाभान्वित हो सकें।

29. राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर "ई- सरल हिंदी वाक्यकोश" शीर्षक के अंतर्गत सामान्यतः अंग्रेजी में प्रयोग होने वाले वाक्यों के हिंदी अनुवाद दिए गए हैं जिनके प्रयोग से अधिकारी फाइलों पर सामान्य टिप्पणियां आसानी से हिंदी में लिख सकते हैं।

30. अंतरराष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार कराकर रिकॉर्ड के लिए फाइल में रखे जाएं।

31. हिंदीतर राज्यों में बोर्ड, साइन बोर्ड, नामपट्ट तथा दिशा संकेतकों के लिए क्षेत्रीय भाषा, हिंदी तथा अंग्रेजी, इसी क्रम में, प्रयोग की जानी चाहिए।

32. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी संबंधी कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएं ताकि वे अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक तरह से कर सकें।

33. हमें अपने कार्य-व्यवहार में आम जीवन में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए ताकि सामान्य नागरिक सरकारी नीतियों/ कार्यक्रमों के बारे में सरल हिंदी में जानकारी प्राप्त कर सकें।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी / डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	40%	30%	20%

(न्यूनतम अनुभाग)
सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

कोई कमाल थोड़ी ही है

वर्जीर सिंह, सहायक

माना कि थोड़ा ख़याल है उसका,
मगर इतना भी खास ख्याल थोड़ी है।
वो जो लाल सी आँख दिखती है कभी कभी,
यह आँख उसके लिए लाल थोड़ी है।
यूँ आँखें तो सबके पास हैं, मगर नजर- नजर में फर्क है,
हर नजर उस नूर से निहाल थोड़ी है।
रंग बिरंगी दुनिया मिली तो है देखने को,
मगर हर रंग कोई कान्हा वाला गुलाल थोड़ी है।
यहाँ पर नंबरों के घटने- बढ़ने से जो बदलता है हाल,
ऐसा हाल सबका हाल थोड़ी है।
यहाँ हर बच्चा लाल है अपनी माँ का,
मगर हर कोई गुदड़ी का लाल थोड़ी है।
ज़िंदगी में चलती रहती हैं छोटी- बड़ी कई बातें,
मगर हर बात में पुरानी जिद का सवाल थोड़ी है।
हर ईंट का जबाब पत्थर है आजकल,
अब हर किसी के पास वही बापू वाला गाल थोड़ी है।
अपनी दोस्ती की क्या बात करें, दोस्त तो कई हैं अपने,
मगर उसके जैसी कोई मिसाल थोड़ी है।
नशा ऐसा जहरीला कि अब छिपकली और सांप तक जा रहे हुक्के में,
मगर हर चीज कोई हलाल थोड़ी है।
इस वर्तमान के बोए अपने कर्म ही भविष्य में फल होंगे,
सदा मिट्टी में दबा रहने वाला कोई भूतकाल थोड़ी है।
सुना हैं सिर्फ साँसें ही नहीं पूरी कायनात मालिक की मर्जी से है,
फिर इसमें तेरा या मेरा कमाल थोड़ी है।

अच्छे नहीं लगते

वजीर सिंह, सहायक

चलो यार फिर से तलाशो कोई नई वजह एक हो जाने की,
यूँ बिखरे- बिखरे से तुम अच्छे नहीं लगते।
चलो यार फिर वही ढेरों शिकायतें करो मेरी मुझसे,
यूँ ख़ामोश से तुम अच्छे नहीं लगते।
अरे यार हंसा करो खुलके, फूलों की खिलखिलाहट हो जैसे,
यूँ गुमसुम से तुम अच्छे नहीं लगते।
लौट चलो यार सुकून की ओर इस अजब बेकरारी से,
यूँ बेकरार से तुम अच्छे नहीं लगते।
सुनो यार बड़े हो गए हो अब, तुम समझदार भी बनो,
यूँ बचपना सा करते अच्छे नहीं लगते।
देखो यार परेशानियाँ तो आनी-जानी हैं, जिंदगी का हिस्सा है यह मगर,
यूँ परेशान से तुम अच्छे नहीं लगते।
याद है कभी रौशन थी महफिल तुम से भी यह दोस्तों की,
यूँ बेज़ार से तुम अच्छे नहीं लगते।
जगना है तो दीपक से जगमगा उठो जो अंधेरा दूर कर सको काली घनी रातों का,
यूँ बुझे-बुझे से तुम अच्छे नहीं लगते।
उठो यार तुम से उम्मीदें बहुत हैं, अब फिर वही उम्मीद बनो हमारी,
यूँ लाचार से तुम अच्छे नहीं लगते।
समझो कुछ तो पिछली बात होगी जो तुम ही दोस्त बने इतनी बड़ी दुनिया में,
अब यूँ गैर से दिखते तुम अच्छे नहीं लगते।
देखो यार मत चुराया करो नज़रों को, कर सको तो करो आमना- सामना,
यूँ नजरें चुराते तुम अच्छे नहीं लगते।
जानो कि उदासी सी छाई है तेरे रूठ जाने से, तुम बात तो करो किसी बहाने से,
यूँ खफा-खफा से तुम अच्छे नहीं लगते।
आओ यार अब सच बताता हूँ तुम सिर्फ अच्छे नहीं, बहुत अच्छे हो,
फिर पता नहीं क्यों आजकल उतने अच्छे नहीं लगते।
हो सकता है कि दोस्ती दिल तक न हो यह कहीं रूह में उतरी हो,
तभी दोस्त, दुश्मनों की कतार में कभी तुम अच्छे नहीं लगते।
अपने शहर से दूर जाने का ख्याल छोड़ो यार, यूँ ही आस-पास बसो आँखों के,
यूँ दूर जाते तुम सपने में भी अच्छे नहीं लगते।
खिले रहो बहार के फूलों की तरह सदा तुम महक बिखेरो चारों ओर,
मुरझाए से तुम कभी अच्छे नहीं लगते।

विकास लखचौरा, कनिष्ठ अभियंता

मां जब तुमने छुआ था

मां जब तुमने मुझे छुआ था
एहसास एक अनोखा सा हुआ था
लम्हा वो ठहरा हुआ सा था
एक अनजानी सी खुशी का रास्ता मानो सामने खड़ा था
लग रहा था मानो मिल गई मुझे जन्नत
जिसे पाने को हर कोई करता है भगवान से मन्नत
अपनी गोद में स्नेह से था जब तुमने मुझे पकड़ा
उस स्नेह ने मेरे पूरे शरीर को भी था जकड़ा
जब शीतलता से तूने मेरे माथे को था चूमा
इस संसार की सारी बलाओं ने मुझसे था अपना रूख मोड़ा
तेरी आंख में भले ही थी नर्मी
पर वो हृदयस्पर्शी मुस्कान पूरी कर रही थी उसकी कमी
तेरे स्नेहमयी स्पर्श ने मेरे रोम-रोम को पुलकित कर दिया था
सांसे तो मैं ले रहा था पर असल में उसी दिन तो जीवित हुआ था
तेरी बांहों में आकर खुद को कीमती मैंने महसूस किया था
लफ्जों में न बयां कर पाया था उस दिन
पर हां मैं अधूरा उसी दिन तो पूरा हुआ था।

मैंने सीखा है...

अमित बहादुर, सहायक

धूप की पहली किरण कैसे भरती है जीवन में उत्साह,
कैसे अंधेरे में भी एक उजाले की किरण दिखाती है राह,
कैसे लहलहाते खेत, किसान की मिटाती है तृष्णा,
और कैसे बहती नदी, निरंतर चलते रहने की जगाती चाह,
कुदरत के रंग निराले, हर मौसम उमंगों व उम्मीदों वाले ,
हाँ मैंने सीखा है कुदरत के कारण ही है जीवन में प्रवाह।

वन के जीवों से सीखा है आज़ादी का महत्व,
पक्षियों से सीखा बेखौफ ऊँचा उड़ना व चहकना,
चट्टानों से सीखा सुदृढ़ रखना अपना वर्चस्व,
फूलों से सीखा काँटों के साथ भी निस्वार्थ महकना,
आनंद विभोर करने वाला है यह पर्यावरण सारा,
हाँ मैंने सीखा है शून्य में भी खुद को जीवित रखना।

बड़ों से सीखी छोटी-छोटी बातें जैसे कि हर रिश्ते को समझना,
और छोटों से बड़ी-बड़ी बातें जैसे कि बेफिक्री से ज़िंदगी जीना,
परिवार से सीखा एकसाथ मिलकर सुख दुख को सांझा करना,
और अपनी माँ से सीखा है तकलीफ़ों के घूंट हँसकर पीना,
वक्त गुजरता रहा अच्छा भी और बुरा भी,
हाँ मैंने सीखा है हर हाल में ज़िंदगी को हँसकर जीना।

ज्योतिषशास्त्र

अनंत प्रकाश वर्मा, सहायक निदेशक

सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और रवि।
सात ग्रहों के फेरे में जिंदगी कुछ यूं फंसी।।
दिन बदल गए दुर्दशा में और रातें भूखमरी में।
सोचा कुछ यूं करें, भाग्य जिससे सुधरे।।
तभी सुना जनों से दूर -दूर तक एक ज्योतिषि हैं पधारे।
देख ललाट ही केवल भविष्य को बतलाते हैं।।
कर्णपटल सुन महिमा उनकी, द्वार हृदय का लगे खोलने।
वैचारिक शक्ति कहे मिथ्या, मन कहे सत्य नहीं दूजा।।
कशमकश की इस दुविधा से, आज निकल पाया हूँ।
भाग्य सुधरने की आशा में, ज्योतिष शरण आया हूँ।।
देख दशा दीन मेरी, पहले ही शब्द से छूरी।
लगा लगाने नमक घाव पर, दुर्दशा का वर्णन करके।।
पहले जो थी नितांत व्यक्तिगत, आज सार्वजनिक हो गई।
जो भूख सिर्फ थी मेरी, वो आज सभी की हो गयी।।
भविष्य सुनते - सुनते शर्म से गड़ा जा रहा हूँ, और सोचता हूँ।
क्यों आया ये सुनने, क्या वर्तमान प्रभावित होगा इससे।।
विचारों की इस तन्द्रा से बाहर निकल कर पाया।
ज्योतिषी जी मांग रहे हैं, अपने कार्य की माया (दक्षिणा)।।
अंतिम दस रूपए का नोट, जो था अगले दो दिन का भोग।
समर्पित उन्हें कर प्रणाम किया, लौट रहा हूँ वापस घर।।
सोच रहा हूँ क्षुधा शाम की, अब कैसे मिटाऊंगा।
क्या बनिया उधार देगा, या भूखा ही सो जाऊंगा।।
भूत भविष्य की इस गणना में वर्तमान तो वही है।
पर आशा हैं कल की ज्योतिषशास्त्र बदल देगा उसे।।

समय की पुकार

नीलम, सहायक

सुने सभी समय की पुकार,
रखे संयमित अपना आचार-व्यवहार
मिली है शक्तियाँ-मत भूलों यह अरे ये तो है काँटो का ताज

अनजाने मे अहित न हो हाथों हमारे ,
सुनो समय की यह पुकार।

ज़ान अपने को समाज हित मे लगाये,
ऋषि-मुनियों की देन-वेद-शास्त्र इनके मार्गदर्शन से जीवन सरल बनाए।

संस्कारों और संस्कृति का हो सम्मान,
गौरवमयी देश हमारा इसके गौरव को बढ़ाना है
पीड़ियों को अगली सुंदर उपवन-उन्नत व्यक्तित्व देकर जाना है।
सुनो समय की यही पुकार।

जगदीश चन्द, सहायक

जीवन का सत्य

दिल मे बुराई रखने से भला है ,कि 'नाराज़गी "
जाहिर कर दो,
जहाँ दूसरों को समझाना 'कठिन हो वहाँ खुद को
समझा लेना ही बेहतर है .
खुश रहने का सीधा सा एक ही मंत्र है।
कि उम्मीद अपने किसी खास से रखो,
सभी से नहीं दुनिया मतलब की है।
गिले शिकवों का भी कोई अंत नहीं है, जनाब,
पत्थरों को भी शिकायत है ,कि पानी की मार से टूट रहे हैं हम
और पानी को भी शिकयत है कि पत्थर हमे
खुल कर बहने नहीं देते है।

जिन्दगी

'कभी हँसते हुए छोड़ देती है ये जिन्दगी
'कभी रोते हुए छोड़ देती है ये जिन्दगी,
'न पूर्ण विराम सुख मे
'न पूर्ण विराम दुख में.
'बस जहाँ देखो वहाँ अल्पविराम छोड़ देती है, ये जिन्दगी
प्यार की डोर संजोय रखो यारों,
'दिल को दिल से मिलाये रखो यारो,
'क्या लेकर आए थे, क्या लेकर जाना है, दुनियां से यारो
'मीठे बोल वाणी और व्यवहार संस्कार से रिश्तों को बचाए रखो यारो|

" फर्क "

इंसान :- फर्क सिर्फ इतना हैं।
कुछ जख्म देते हैं।
कुछ जख्म भरते हैं।

हमसफर:- फर्क सिर्फ इतना हैं।
कुछ साथ चलते हैं।
कुछ साथ छोड़ जाते हैं

प्यार:- फर्क सिर्फ इतना है
कुछ जान देते हैं,
कुछ जान लेते हैं।

रिश्ते:- फर्क सिर्फ इतना है
कुछ रिश्ते निभाते हैं
कुछ रिश्ते आजमाते हैं।

ईश्वर में विश्वास

ईश्वर के विश्वास में खोया,
मैंने जीवन को पाया।
अंधेरे में जब राह न दिखे,
उसने मुझे हमेशा संग लिया।

विश्वास की किरणों ने मुझे आगे बढ़ाया,
दुख-सुख में वहीं मेरा साथ बनाया।
जीवन की चाह में कभी हिचकिचाहट हो,
उसने मेरे सपनों को साकार किया।

ईश्वर के विश्वास में है शक्ति अद्भुत,
जीवन को सार्थक और समर्पित किया।
हर दिन, हर पल, उसकी कृपा में,
बस उसके आदर्शों का अनुसरण किया।

जब समय आया जीने का
उसने आशा की रोशनी दिखायी।
ईश्वर के विश्वास में है
उसके साथ हर मुश्किल को आसान बनाया।

जीवन के हर मोड़ पर,
उसके साथ चलना ही सच्चा धर्म बनाया।

ईश्वर के विश्वास में मिली मन्नतें,
हर सुख-दुःख में उसका नाम लिया।
उसकी कृपा, उसकी माया,
ईश्वर के विश्वास में है सच्चा सम्मान लिया।

हरविंदर सिंह
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

धैर्य

कभी कभी ज़िन्दगी की राहें थोड़ी बहुत हैं,
जब सब लगता है हाथ से निकल गया है वक़्त।

पर जानो, धैर्य से इंतज़ार करने से ही,
मिलता है वह अनमोल लम्हा, जो है बेपनाह।

जैसे सूरज की किरणें धीरे-धीरे उगती हैं,
वैसे ही मनुष्य की मेहनत का परिणाम होता है सच्चा।

धैर्य रखो, दिल से इंतज़ार करो,
आएगा वह समय, जब सब कुछ होगा प्यारा।

ज़िन्दगी की हर सीमा को पार करेगा धैर्य,
सहेगा हर मुश्किल, बनेगा मार्गदर्शक इस राह का।

इसलिए धैर्य रखो, मन को समझाओ,
जब तक जिएंगे, हर समस्या को प्यार से स्वीकार करो।

धैर्य ही है वह मीठा फल,
जो सबके जीवन को बनाता है सुंदर और विशाल।

पर्यावरण संरक्षण

कविता रानी
प्रवर श्रेणी लिपिक

पर्यावरण हमारी शान है
धरती की पहचान है

एक युग वह था जब थी चारों तरफ हरियाली,
पेड़-पौधे, जीव और जन्तु,
फूलों से सजती थी क्यारी।

पेड़ बिना नहीं मिलेगी ऑक्सीजन
गन्दा हो पानी तो कैसा होगा ये जीवन।

कोयल की मृदु वाणी से होती थी दिन की शुरुआत
पर न जाने क्यों हो गई यह अनहोनी बात।

चारों तरफ नज़र है आता केवल जनसंख्या अम्बार
सूख गई है प्यारी धरती, खत्म हो गए खेत खलियान।

पेड़ों से हमें जीवन मिलता
क्यों न हम भी दें इन्हें जीवन
क्यों न हम सब कदम बढ़ाएँ
धरती को हरा-भरा बनाएँ
लेकर शपथ हम आज हैं कहते
पर्यावरण को हम बचाएँगे,
फिर एक बार सबके होंठो पर मुस्कान हम लाएँगे।

मौत के स्वाद का चटखारे लेता मनुष्य

सुमन लता, सहायक

मौत से प्यार नहीं, मौत तो हमारा स्वाद है...........
बकरे का, गाय का, भैंस का, ऊँट का, सुअर का,
मुर्गे का, हलाल का, बिना हलाल का,
ताजा बकरे का, भुना हुआ, छोटी मछली, बड़ी मछली,
हल्की आँच पर सिका हुआ.......
न जाने कितने बल्कि अनगिनत स्वाद है मौत के।
क्योंकि मौत किसी और की, और स्वाद हमारा..........

स्वाद से कारोबार बन गयी मौत
मुर्गी पालन, मछली पालन, बकरी पालन, पोल्ट्री फार्म्स।
नाम 'पालन' और मकसद 'हत्या'।
स्लाटर हाउस तक खोल दिये, वो भी ओफिशियल।
गली गली मे खोले नॉन वेज रेस्ट्रोरेंट ......
मौत का कारोबार नहीं तो और क्या है
मौत से प्यार और उसका कारोबार इसलिए
क्योंकि मौत हमारी नहीं है।

जो हमारी तरह बोल नहीं सकते,
अभिव्यक्त नहीं कर सकते,
अपनी सुरक्षा स्वयं करने मे समर्थ नहीं है,
उनकी असहायता को हमने अपना बल कैसे मान लिया ?
कैसे मान लिया कि उनमे भावनाएँ नहीं होती या
उनकी आहें नहीं निकलती ?

डायनिंग टेबल पर हड्डियाँ नोचते बाप बच्चो को सीख देते है
बेटा कभी किसी का दिल नहीं दुखाना,
किसी कि आहें मत लेना।
किसी की आँख मे तुम्हारी वजह से आँसू नहीं आना चाहिए।
बच्चो मे झूठे संस्कार डालते बाप को,
अपने हाथ में तो हड्डी दिखाई नहीं देती,
जो इससे पहले एक शरीर थी,
जिसके अंदर इससे पहले एक आत्मा थी,
उसकी भी एक माँ थी
जिसे काटा गया होगा, जो कराहा होगा, जो तड़पा होगा,
जिसकी आहें निकली होंगी, जिसने बद्दुआ भी दी होगी।
कैसे मान लिया कि जब जब धरती पर अत्याचार बढ़ेंगे,
तो भगवान सिर्फ तुम इंसानों की रक्षा के लिए अवतार लेंगे
क्या मूक जानवर उस परमपिता परमेश्वर की संतान नहीं है ?
क्या उस ईश्वर को उनकी रक्षा की चिंता नहीं है ?

धर्म की आड़ मे उस परमपिता के नाम पर अपने स्वाद के लिए
कभी ईद पर बकरे काटते हो,
कभी दुर्गा माँ या भैरव बाबा के सामने
बकरे की बलि चढ़ाते हो
कही तुम अपने स्वाद के लिए मछली का भोग लगाते हो।

कभी सोचा......... किसे ठग रहे हो ?
भगवान को, अल्लाह को, जीसस को या खुद को?
मंगलवार को नॉन वेज नहीं खाता
आज शनिवार है इसलिए नहीं
अभी रोजे चल रहे है..... नवरात्रि मे तो सवाल ही नहीं उठता
झूठ पर झूठ ...... झूठ पर झूठ ...... झूठ पर झूठ ......

ईश्वर ने बुद्धि केवल तुम्हें दी है,
ताकि तमाम योनियों मे भटकने के बाद
मानव योनि मे तुम जन्म मृत्यु के चक्र से
निकलने का रास्ता ढूंढ सको।
लेकिन तुमने इस मानव योनि को पाते ही
स्वयं को भगवान समझ लिया।
तुम्ही कहते हो कि हम जो प्रकृति को देंगे,
वही प्रकृति हमें लौटाएगी।
यह संकेत है ईश्वर का।
प्रकृति से साथ रहो, प्रकृति के होकर रहो।

वक्त नहीं

निपैंद्र सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

जिंदगी कितनी व्यस्त हो गई है,
कि अपने आप के लिए वक्त नहीं
हज़ ख़ुशी है लोगों के दामन में,
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं
दिन रात दौड़ती दुनिया में,
जिंदगी के लिए वक्त नहीं
माँ की लोरी का एहसास तो है
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं
सारे रिश्तों को हम मार चुके,
अब दफनाने का वक्त नहीं
सारे नाम मोबाईल में है,
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं
गैरों की क्या बात करें,
जब अपनो के लिए वक्त नहीं
आँखों में है नींद बड़ी
पर सोने के लिए वक्त नहीं
पैसों की दौड़ में ऐसे दोड़ दौड़े
कि थकने के लिए वक्त नहीं
पराए एहसासों की क्या कदर करें,
जब अपने सपनों के लिए वक्त नहीं
दिल में बहुत बाते हैं बताने के लिए,
लेकिन बताने के लिए वक्त नहीं।

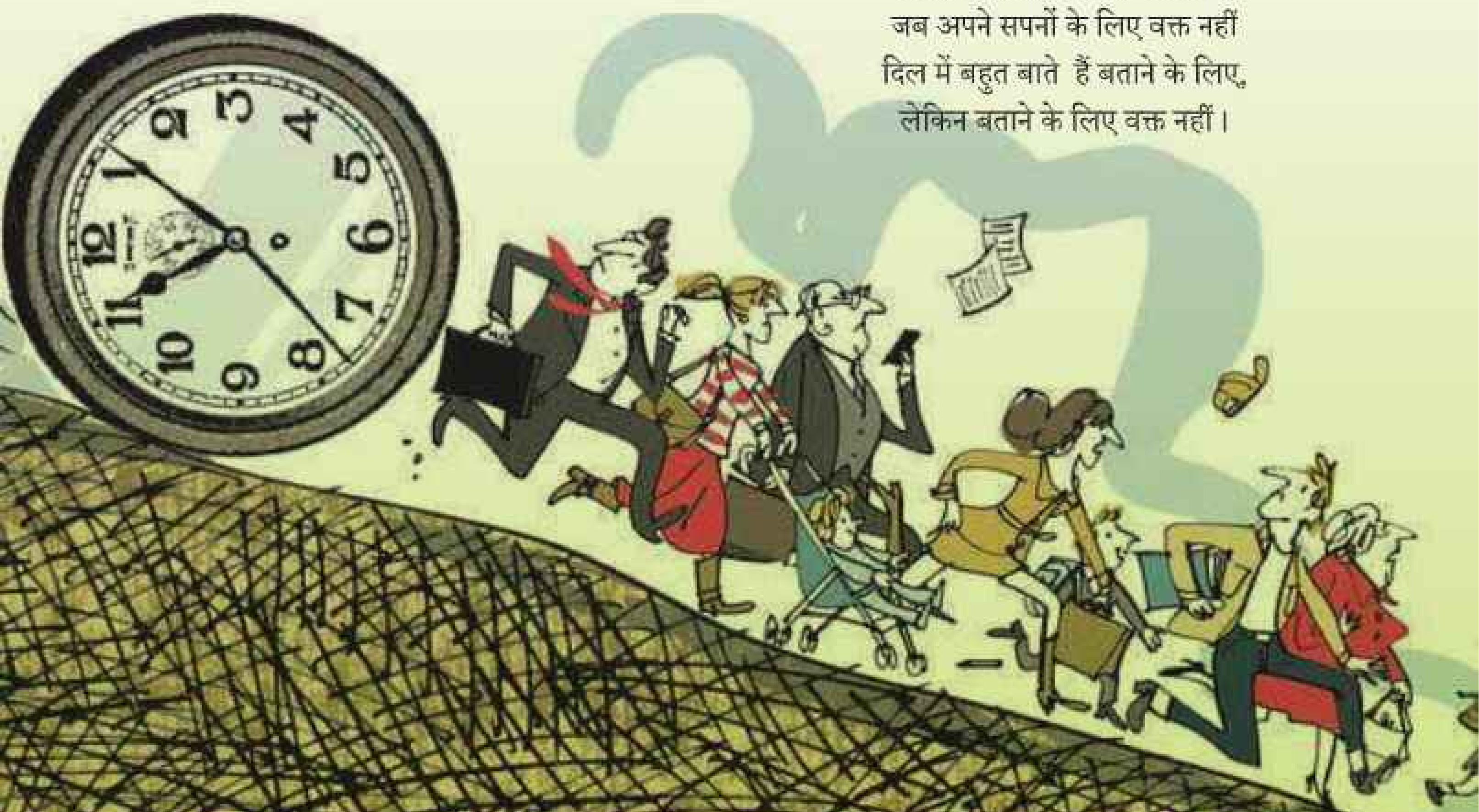

जब ठान लिया

हर्ष जिंदल, सहायक

जब ठान लिया क्या पाना है तुम्हें.
फिर हार को सोचना फिजूल है
अपने डर को तुम डराकर रखना
ये जीत का पहला उसूल है
आसमान का कद भी छोटा लगे
पंख अपने कुछ यूं फैलाएंगे हम
क्या हुआ बादल नहीं किस्मत में हमारी
बूंद – बूंद से सागर बनाएंगे हम
लोग कहते हैं तो कहते रहे
उन्हें कर के दिखाएंगे हम

ये जान ले के अगर बेजान है जिंदगी
तो उसमें जान भी हमी ने डालनी है
दूसरे चाहे लाख जीत जाए तुझसे
हातिफ बस तूने खुदसे हार न माननी है
सोच मत के मिला नहीं महल विरासत में तुझे
चिड़िया की तरह तिनके तिनके से घर बनाएंगे हम
क्या हुआ बादल नहीं किस्मत में हमारी
बूंद बूंद से सागर बनाएंगे हम
लोग कहते हैं तो कहते रहे
उन्हें कर के दिखाएंगे हम

जिंदगी ने अगर इंसाफ नहीं किया तुझ संग
कोई न तु अपने संग इंसाफ करियो
लगा रहियो अपने सपनों को साकार करने
न कि लोगों को सुनने में वक्त बर्बाद करियो
न बतइयो किसी को तू सफर अपना
सीधा जीत का झंडा फहराएंगे हम
क्या हुआ बादल नहीं किस्मत में हमारी
बूंद बूंद से सागर बनाएंगे हम
लोग कहते हैं तो कहते रहे
उन्हें कर के दिखाएंगे हम

बच्चों की बात

यश वर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक

तन के सुंदर मन के सच्चे
सबको लगते प्यारे बच्चे
सूरत इनकी भोली भाली
बच्चों की है बात निराली

चाहे जो भी हो मजबूरी
इनकी मांगे होती पूरी
इनके वचन न जाएं खाली
बच्चों की है बात निराली

इनसे घर आंगन सजता है
इनसे घर घर सा लगता है
इनसे घर आती खुशहाली
बच्चों की है बात निराली

मन में कोमल आशा लेकर
जीवन की अभिलाषा लेकर
करते सपनों की रखवाली
बच्चों की है बात निराली

हिंदी हूं

कुमार रविशंकर
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भाषा का अरमान हूं
वाणी की मुस्कान हूं
मन का मधुर गान हूं
भावों का परिधान हूं

गौरवमयी पहचान हूं
संपर्क का ज्ञान हूं
कवियों का उद्यान हूं
साहित्य का सम्मान हूं

आजादी का यशगान हूं
स्वभाषा का अभियान हूं
जनता का कल्याण हूं
सौ प्रतिशत समाधान हूं

संस्कृत की संतान हूं
देश का संविधान हूं
भारत की पहचान हूं
हिंदी हूं हिंदुस्तान हूं

जिंदगी

संदीप स्याल, सहायक निदेशक

इंसानों की इस बस्ती में, अकेला रह ना जाए कोई
मानवता का फर्ज निभा, भला तू कर सबका।
जिंदगी जीने के लिए,सबका भला कर ,
न किसी से बैर हो, न तेरे दर से कोई खाली हाथ जाए, सिर्फ पैसे से नही,
दिल से तू मददगार हो।

जीवन के इस अनमोल सफर में,
तू सबका भागीदार हो, मानसिक बीमारी की इस जगत समस्या का,
बस यही एक उपचार है,कोई अकेला न रहे सबका इस जग में मान रहे ,
इस संसार में तेरा समर्पण कभी न जाए व्यर्थ,
तेरे कर्म तेरे संग,खुशियों से भर दे जीवन के रंग।

तुझ में शक्ति तुझ में भक्ति,खुद में तू विश्वास रख ,
जीवन मरण निश्चित है तो,फिर किस बात की देर है ,
मानवता के कल्याण में तेरा हाथ हो,
जिंदगी जीने में तू मानवता के साथ हो।

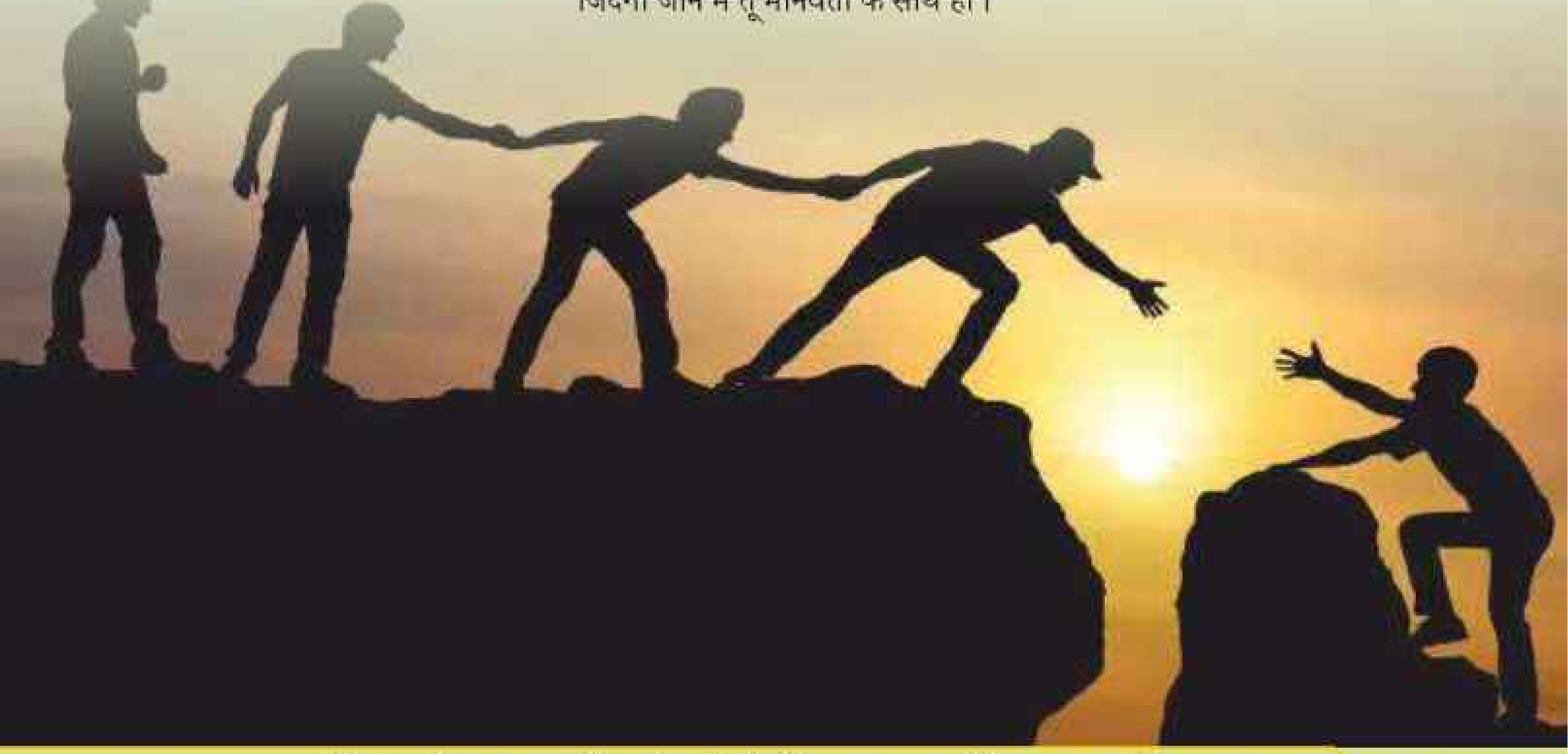

पढ़ा-लिखा

हर्ष जिंदल

पढ़ा लिखा वो नही,
हजारों डिग्रियाँ है जिसके पास,
पढ़ा लिखा तो वो है,
मां बाप है जिसके लिए सबसे खास......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो अंग्रजी जानता है,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो सही गल्त पहचानता है......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो पहनता है सूट बूट,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो अपनों से नही बोलता झूठ......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो पैसा बहुत कमाता है,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो जिम्मेदारी से जीवन बिताता है......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो शान से जिया करता है,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो दूसरों के लिए जीता मरता है......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो जानता है सोसायटी में रहना,
पढ़ा लिखा तो वो है,
हो हमदर्दी से भरे जिसका नैना......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो ब्रेड बटर खाता है,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो पहले मां को रोटी खिलाता है......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो ऊंची इमारतों में रहता है,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो मां के आंचल को जन्नत कहता है......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो लाखों किताबें पढता है,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो कमजोर को संग रखता है......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो कॉलेज युनिवर्सिटीयाँ जाता है,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो सभी फर्ज निभाता है......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो देश को बदलना चाहता है,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो दूसरों को जीना सिखाता है......

पढ़ा लिखा वो नही,
जो आप पैरों पे खड़ा है,
पढ़ा लिखा तो वो है,
जो सदा दूसरों के लिए लड़ा हो......

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।"

फुर्सत के लम्हें

राकेश कुमार
बहु कार्य स्टाफ

- तुझसे शिकायत क्या करें ए रहबर, तेरी निगेहबान में तो रहते है।
  बेशक समझ हमें पराया तो क्या गम है, गम ए महफिल में भी तेरे सजदे किए फिरते है।

- जर्रा हूँ मैं इस जमीं का, पानी नहीं पसीने से सींचा हुआ है।
  बेशक तपन है परवरिश में तेरी, तपकर इस तपिश में ही तो ये मुकाम पाया है।

- यादों के लम्हों को जीने लगा हूँ, फुर्सत तो अब भी नहीं है,
  पर ज्यादा कमाने लगा हूँ, नहीं अफसोस के, क्या पाया और क्या खोया है,
  मुकम्मल जहान तो यहां, कहां किसी ने पाया है, फिक्र सिर्फ इस बात की है के,
  जो मिला ही नहीं, उसे तलाशता रहा हूँ, और जो है, क्या उसकी कद्र कर पाया हूँ।

- हर शाम को तेरा इंतजार रहता है, हर रात तेरी बेरुखी को सहती है।
  फिर भी ना जाने इस दिल को क्यों हर अगली सुबह में तेरा एतबार रहता है।

- सुना है हर शख्स बेनकाब है इस जमाने में, कोई बाज़ार में तो कोई आईने में।
  मैं भी यहीं सोचकर पीता रहा, के सिर्फ शराब ही तो है म्यखाने में।

- जो भी करो सिद्दत से करो, फायदा और नुकसान से बेपरवाह रहो।
  मंजिल तो हम भी पा लेंगे, तुम मुकाम तक साथ तो चलो।

- कर गुजर इस कदर, के तेरी आहट ही काफी हो।
  होंसले हो बुलंद तो गैरों की परवाह ही क्या है।

- बड़े देखे है तेरे इश्क के परवाने, कोई तेरी सूरत तो कोई हुस्न के दीवाने,
  हमने तो चाहत की है सीरत से तेरी, दोज़ख में साथ रहेंगे तेरे।

- दोस्ती रिश्ता है अपनेपन का, खुद की और दूसरों की सीरत समझने का।
  वरना दुनिया है तो है ही बेवफा, सूरत देखकर रिश्ता रखना और चेहरा बेनकाब होना।

- मंजिल पर तो मिल जाते है साथी बहुत, राहों पर तो अलबेले ही साथ चलते है।
  यूँ न हम पर रहम कर ए रहबर, हम तो परिंदे है तेरे बनाएँ आसमां को भी नाप देते है।

- जाने वो कौन सी खता कर बैठे, अपने होकर भी बेगाने बन बैठे।
  पर जमाने का दस्तूर है ये, वफा करके भी उन्हें खफा कर बैठे।

ममता का आंचल
धरती पर स्वर्ग

मनोज तंवर, सहायक निदेशक

दुनियां कहती जिसे भगवान का रूप,
शक्ति का स्वरूप, ममता का प्रतिरूप।
सूरत देखकर मिलती उर्जा अपार,
नित नई चुनौतियों से पार पाते हर बार।
सहम जाते है जिसके बिन होने से,
जीवन के इस संघर्ष में अकेले चलने से।
ममता की डोर का छोर थामे रखना,
मतलब की भीड़ से बचाए रखना।
वात्सल्य के समंदर में सदैव डुबाये रखना,
क्षितिज के उस पार भी पहचान बनाए रखना।
धरती पर स्वर्ग का अहसास दिलाता है,
देवों के अवतरण का आधार बनता है।
दिव्य अस्तित्व का आभास कराता है॥
आंचल की छांव में ही तो जीवन का सार है,
संसार के सभी सुखों का आधार है।

मेरी समुद्री यात्रा

संजीव कुमार, सहायक

यह किस्सा वर्ष 2002 का है। उन दिनों में चण्डीगढ़ में कॉलेज में पढ़ता था। कॉलेज के प्रथम वर्ष से ही मैंने राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) की नौसेना विंग (Naval wing) में भी प्रवेश ले लिया था। राष्ट्रीय कैडेट कोर अपने कैडेटों के लिए कई प्रकार के कैंपों का आयोजन करवाता है। इन कैंपों में तीनों सेनाओं की भांति संबंधित विंग के कैडेटों को ट्रेनिंग दी जाती है। नौसेना विंग द्वारा विशाखापट्टनम, आन्ध्रा प्रदेश में 15 दिनों के लिए अखिल भारतीय नौसैनिक कैंप लगाया जाता है। इस कैंप में अखिल भारतीय स्तर पर कैडेट चुन कर ट्रेनिंग के लिए भेजे जाते हैं। हमारी चण्डीगढ़ की टीम नौकायन प्रतियोगिता (Boat Sailing) में स्वर्ण पदक विजेता थी जिस कारण हमारी टीम का नौसैनिक कैंप हेतु चयन हुआ। नवम्बर 2002 में हमारा कन्टिजैंट विशाखापट्टनम के लिए रवाना हुआ। विशाखापट्टनम कैंप में पहुंच कर अगले दिन से हमारी ट्रेनिंग शुरु हो गई। मन में इतनी खुशी हो रही थी तथा ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे भारतीय नौसेना में मेरा चयन हो गया है।

मेरे लिए सबसे रोमांचकारी दिन वो था जब हमें भारतीय नौसेना पोत पर जाने हेतु निर्देश प्राप्त हुए। हमें निर्देश दिए गए कि अगली सुबह चार बजे तैयार होकर नौसेना की गाड़ियों में बैठकर विशाखापट्टनम बंदरगाह नौसेना जैटी (Naval Jetty) पर जाना है वहां से हमें भारतीय नौसेना के पोत में बिठा कर समुद्र की यात्रा करवाई जाएगी। हम सभी मित्र काफी खुश थे व अगले दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। अगली सुबह हम सब तैयार होकर विशाखापट्टनम बंदरगाह पहुंच गए। वहां पहुंचकर देखा कि बंदरगाह पर भारतीय नौसेना के बड़े बड़े जहाज खड़े हैं। इससे पहले समुद्री जहाज केवल फिल्मों में देखे थे। यह क्षण मेरी कल्पना से परे था कि इतने विशालकाय जहाज पानी में तैर रहे हैं। हम सब कैडेटों को नौसेना के पोत आईएनएस कोझिकोड (एम71) में बिठाया गया। आईएनएस कोझिकोड (एम71) कारवार श्रेणी का एक माइनस्वीपर था जो 2019 तक भारतीय नौसेना की सेवा में रहा। हमारा जहाज बंदरगाह से समुद्र की तरफ चल पड़ा। नौसेना के एक अधिकारी ने हमें बताया कि आप सब कैडेट बड़े भाग्यशाली हो, जो आज भारतीय नौसेना के विध्वंसक श्रेणी के युद्धपोत अभ्यास के लिए विशाखापट्टनम आए हुए हैं जिनमें भारतीय नौसेना का विमान वाहक पोत आई.एन.एस विराट भी है। आई.एन.एस विराट एक ऐसा युद्धपोत है जिसपर हवाई पट्टी होती है व लड़ाकू हवाई जहाज उतर सकते हैं व उड़ान भी भर सकते हैं। थोड़ी देर के बाद हम बंदरगाह से निकलकर समुद्र में प्रवेश कर गए। भारतीय नौसेना के सभी पोत हमें दिखाई देने लगे। उस समय यह नजारा देखने लायक था। भारतीय नौसेना के लगभग 15 युद्धपोत व विमान वाहक पोत आई.एन.एस विराट बंगाल की खाड़ी में एक लाईन में चलते हुए नजर आने लगे। यह नजारा देखकर मन गर्व से भर गया क्योंकि इससे पहले इस प्रकार का नजारा जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। काफी देर तक सभी जहाज इसी तरह चलते रहे। धीरे धीरे हमें किनारा भी दिखना बंद हो गया। चारों ओर पानी ही पानी दिखा रहा था। हम बंगाल की खाड़ी में समुद्री यात्रा कर रहे थे व समुद्र में काफी आगे निकल आए थे। नौसेना के अधिकारी ने हमें सूचित किया कि कई बार समुद्र में लहरें काफी तेज हो जाती हैं जिस कारण जहाज काफी ज्यादा हिलता है व जहाज में सवार लोगों को उल्टी आ सकती है। इसके लिए निर्देश दिए गए कि यदि किसी को उल्टी आती है तो समुद्र में नहीं करनी है बल्कि जहाज के किनारे पर लगी बाल्टियों का प्रयोग करना है। हमारी टीम से किसी को भी इस प्रकार की कोई समस्या नहीं हुई। लगभग तीन घंटे बीत गए व चारों ओर पानी ही पानी दिख रहा था। सब कैडेट यह सोच रहे थे कि वापस किनारे पर ले चलें तो बेहतर होगा। हमने नौसैनिक अधिकारी से वापस जाने हेतु पूछा तो उन्होंने बताया कि जब नौसेना के सारे बड़े युद्धपोत वापस आएंगे व उनके बंदरगाह में प्रवेश के पश्चात ही हमारा पोत बंदरगाह में प्रवेश कर पाएगा। उन्होंने बताया कि बंदरगाह तो शाम को चार बजे के बाद ही वापस जा पाएंगे। हमें निर्देश दिए गए कि यदि कुछ खाना चाहते हैं तो जहाज की रसोई से खाना ले सकते हैं। हम सबने खाना खाया व थोड़ा आराम करने के लिए हम जहाज के अंदर डैक में चले गए जहां डयूटी के उपरांत नौसैनिक सोते या आराम करते हैं। अंदर काफी तंग जगह थी जिसमें पोत की दीवार के साथ सोने हेतु सैल्फनुमा जगह थी बनाई हुई थी। इस जगह को देखकर लगा कि सैनिकों का जीवन कितना कठिन होता है। शाम हुई धीरे-धीरे हम वापस बंदरगाह की ओर वापस चलने लगे। लगभग शाम को 5 बजे किनारे पर पहुंचे व जहाज से उतरकर अपने कैंप में वापस आ गए। इस कैंप के बारे में जब सोचता हूं तो यह अनुभव आज भी मुझे रोमांचित कर देता है।

मेरी केदारनाथ यात्रा

कृतिका शर्मा, सहायक

पुरानी परंपरा है कि हर व्यक्ति को तीर्थ यात्रा जरूर करनी चाहिए। तीर्थ यात्रा जैसे चार धाम की यात्रा, द्वादश ज्योतिर्लिंग की यात्रा, हरिद्वार, मथुरा, काशी, जैसे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का विधान है।

इन्हीं विचारों पर चलते हुए इस वर्ष मैने व मेरी सहेली सुश्री वर्तिका पाण्डेय ने श्री केदारनाथ धाम जाने की योजना बनाई व महादेव के आशीर्वाद से इस वर्ष मई माह मे अपनी तीर्थ यात्रा पूरी कर बाबा के दर्शन प्राप्त किए। हमारे द्वारा की गई यात्रा का वृतांत व हमारे अनुभवों का संक्षेप प्रस्तुत है।

श्री केदारनाथ, भगवान शिव का घर- एक दूरस्थ हिंदू मंदिर है जो समुद्र तल से 11,700 फीट ऊपर और पहाडों की गहराई में स्थित है, जो कि शांति, आध्यात्मिकता और रोमांच का एक आदर्श संयोजन है। श्री केदारनाथ धाम की यात्रा शुरू होने व मंदिर के कपाट खुलने व बंद होने की तिथि प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि को घोषित की जाती है। केपदारनाथ के कपाट बंद होने की तिथि तय होती है यानी दिवाली के दो दिन बाद जब भाई दूज मनाया जाता है।इस वर्ष दिनांक 25.04.2023 को मंदिर के कपाट खुले थे।

उतराखंड में स्थित चारो धामों की यात्रा करने हेतु ऑनलाइन पंजीकरण करवाना अनिवार्य है। यह पंजीकरण भी मंदिर के कपाट खुलने से लगभग दो माह पहले ही शुरू हो जाता है। चूंकि बुकिंग हेतु कुछ सीमित स्लॉट ही मौजूद होते है, हमारे द्वारा यात्रा का पंजीकरण व बुकिंग पहले ही मार्च में कर ली गई थी। इसके साथ-साथ हमने केदारनाथ में रहने हेतु आवास की बुकिंग भी पहले ही कर ली। हालांकि वहाँ पर पहुंचने पर भी कमरे/टेंट मिल जाते है, लेकिन हम मई महीने में श्रीकेदारनाथ धाम जा रहे थे, जब भीड़ ज्यादा होती है, इसलिए हमने कमरे की बुकिंग पहले ही करवाना उचित समझा।

हमने अपनी यात्रा शुरू करते हुए चंडीगढ़ से हरिद्वार की बस ली व यात्रा लंबी होने के चलते, एक दिन हरिद्वार में ही विश्राम करना सही समझा। कुछ देर आराम करने के पश्चात हम हर की पौड़ी पर गंगा मइया का आशीर्वाद लेने गए। हर की पौड़ी गंगा नदी के तट पर स्थित पवित्र घाट है, ऐसा माना जाता है कि यहीं वह स्थान है जहां आकाश से अमृत की बूंदें गिरी थीं। कई लोगों का मानना है कि वहां डुबकी लगाने से सारे पाप धुल जाते हैं। आरती शुरू होने से पहले हम वहां पहुंच गए और शांत पवित्र वातावरण को आत्मसात करते हुए सुंदर अनुष्ठान देखा।

अगले दिन सुबह 5 बजे हमारी बस हरिद्वार बस स्टैंड से चली। हरिद्वार से सोनप्रयाग की दूरी 231 किमी है। सड़क तेज़ गंगा और दूसरी ओर पहाड़ों के साथ घुमावदार थी। रुद्रप्रयाग से पहले बस थोड़ी देर पहले खाने-पीने के लिए रुकी। मौसम बहुत उज्ज्वल और ठंडा था। और, पहाड़ों पर हरे-भरे जंगलों के साथ-साथ छोटे-छोटे गाँव, खेत हमें हमारी यात्रा में सुंदरता की एक अतिरिक्त परत प्रदान करते हैं।

हम लगभग 3 बजे सोनप्रयाग पहुँचे। यह तथ्य कि हम केदारनाथ के इतने करीब हैं, हमारी आत्मा को उत्साहित कर गया। हालाँकि, खराब मौसम और केदारनाथ में बर्फबारी के कारण, स्थानीय प्रशासन द्वारा सोनप्रयाग से गौरीकुंड तक की यात्रा को

एक विशेष दिन में केवल दोपहर 12 बजे तक ही सीमित कर दिया गया था। इसलिए, हमें रात के लिए सोनप्रयाग में रुकना पड़ा और अगले दिन सुबह जल्दी अपनी यात्रा शुरू करने का फैसला किया।

हमने अगली सुबह 3 बजे अपनी यात्रा फिर से शुरू की। सोनप्रयाग से, हमने एक साझा जीप (50 रुपये प्रत्येक) ली, जिसने लगभग 30 मिनट में भारी ट्रैफिक जाम के कारण हमें गौरीकुंड से कुछ सौ मीटर पहले छोड़ दिया। गौरीकुंड मंदाकिनी नदी के पास एक सुंदर छोटी जगह है और केदारनाथ ट्रेक का बेसकैंप है।

इन दिनों हेलीकॉप्टर से केदारनाथ के दर्शन करना बहुत आसान है। फाटा से केदारनाथ जाने में 10-15 मिनट का समय लगता है। कई लोग इसकी सुविधा के कारण इस विकल्प को चुनते हैं। लेकिन हमें हेलीकॉप्टर की सवारी में कोई दिलचस्पी नहीं थी और हमने केदारनाथ तक पैदल यात्रा करने का फैसला किया

2013 की बाढ़ के बाद केदारनाथ ट्रेकिंग का मार्ग बदल गया है और नई अच्छी तरह से विकसित सड़क गौरीकुंड से लगभग 22-24 किमी की चढ़ाई वाली ट्रेक है। यह केदारनाथ के लिए बिल्कुल सही रास्ता था। सड़क के कोने में दुकानें और शौचालय थे। साथ ही झरने का बहता पीने का पानी भी हर जगह उपलब्ध था।

मंदाकिनी की घाटी पर बना यह ट्रेक का रास्ता हरियाली से भरपूर था। ऊपर जाते हुए हमने कई खूबसूरत झरने पार किये। जैसे-जैसे हम ऊपर बढ़ते गए, सड़क खड़ी होती गई और रास्ता कठिन होता गया। लेकिन जिस बात ने मुझे चकित कर दिया वह यह थी कि मुझसे तीन गुना अधिक उम्र के लोग अपने दिल में एकमात्र विश्वास के साथ उस खड़ी सड़क पर चल रहे थे कि वे इसे पार कर सकते हैं। उनके विश्वास ने हमें आगे बढ़ने की ताकत दी।

केदारनाथ मंदिर से 1.5 कि.मी पहले केदारनाथ काम्प्लेक्स जहां पर हमारा जी.एम.वी.एन का टेंट स्थित था, वहाँ तक पहुंचने में हमें लगभग ग्यारह घंटे लग गए। वहाँ कुछ देर आराम करने के बाद हम श्री केदारनाथ मंदिर के दर्शन करने निकल पडे।

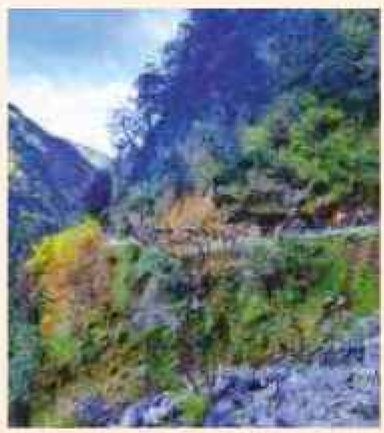

मंदिर में दर्शन हेतु बड़ी लाईन लगी थी, लगभग एक घंटे बाद हमें श्री केदारनाथ बाबा के दर्शन प्राप्त हुए। श्री केदारनाथ मंदिर के पीछे स्थित भीमशीला के भी दर्शन किए। मान्यता है कि 2013 की त्रासदी के दौरान मलबे के साथ यह शीला भी नीचे आई और ठीक मंदिर के आगे रूक गई। इस शीला के चलते आकस्मिक बाढ़ का पानी मंदिर को क्षति नही पहुंचा पाया। स्थानीय लोगों द्वारा इस शिला को भीम का रूप मानते है, जिनके द्वारा इस मंदिर की रक्षा की गई। मान्यता है कि श्री केदारनाथ मंदिर पांडवों द्वारा ही बनवाया गया था। दर्शन प्राप्त होने के बाद हम मंदिर से 500 मीटर दूर स्थित भैरों बाबा के मंदिर में दर्शन करने गए। भैरों बाबा के मंदिर से आशीर्वाद प्राप्त कर सौभाग्य से हमें श्री केदारनाथ मंदिर की आरती में शामिल होने का मौका मिला।

आरती के बाद हम अपने टेंट में विश्राम करने चले गए।अगले दिन सुबह हमने गौरीकुंड के लिए अपनी वापसी यात्रा शुरू की। हमारे नीचे की ओर ट्रेक के दौरान, हमारा काम अन्य पर्यटकों को उनकी ऊपर की यात्रा के लिए प्रोत्साहित करना था। नीचे की ओर यात्रा इतनी कठिन नहीं थी, हम 5 घंटे में गौरीकुंड पहुँच गये। और वहां से सोनप्रयाग के लिए साझा जीप ली। सोनप्रयाग से बस लेकर हम हरिद्वार पहुंचे और अपनी आगे की यात्रा जारी रखी।

यदि आपके मन में भी श्री केदारनाथ धाम जाने की प्रबल इच्छा काफी समय से है और यदि आप यह लेख पढ़ रहे है तो यकीन मानईए यह महादेव को आपको उनके तीर्थ पर बुलाने का संकेत है। उम्मीद है कि मेरे द्वारा प्रस्तुत मेरी यात्रा का संस्मरण आपको अपनी यात्रा की योजना बनाने में मददगार साबित होगा।

हिमाचल प्रदेश के
खूबसूरत हिल स्टेशन धर्मशाला की सैर

साक्षी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक

धर्मशाला हिमाचल प्रदेश राज्य के कांगड़ा जिले में स्थित एक प्रमुख पर्यटन और दर्शनीय स्थल है। यह जगह दलाई लामा के पवित्र निवास के रूप में दुनिया भर में प्रसिद्ध है और यहां आर निर्वासन में तिब्बती भिक्षु रहते हैं। धर्मशाला कांगड़ा से 8 किमी की दूरी पर कांगड़ा शहर में स्थित है। यह शहर अलग-अलग उंचाई के साथ ऊपरी और निचले डिवीजनों के रूप में बंटा हुआ है। निचला डिवीजन धर्मशाला शहर है, जबकि ऊपरी डिवीजन को मैकलोडगंज के नाम से जाना जाता है।

आज धर्मशाला पूरे विश्व में दलाईलामा के मुख्यालय होने कारण मशहूर हैं, इसे मिनी लहासा भी कहा जाता हैं | लहासा तिब्बत की राजधानी हैं, अब तिब्बत पर चीन का कब्जा हैं, तिब्बत चीन से आजादी चाहता हैं| 1959 में दलाईलामा ने भारत में शरण मांगी थी, भारत सरकार ने तिब्बतियों को धर्मशाला में शरण देकर बसाया था| अक्सर मुझे और मेरे परिवार को जब भी वक्त मिलता है हम पहाड़ी रास्तों की तरफ निकल पड़ते हैं।तो बस इस बार हमने वक्त और मौसम को देखते हुए हिमचल की इस खूबसूरती को देखने का निर्णय लिया और निकाल लिए इस यादगार यात्रा पर ।आइए आपको धर्मशाला के सभी मुख्य पर्यटक स्थल से अवगत कराए–

1.धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम: भारत जैसे देश में जहाँ क्रिकेट प्रेमी हर राज्य, कस्बे, शहर और गाँवों सभी जगह पाए जाते हैं| और जब क्रिकेट का आनंद सीधा क्रिकेट स्टेडियम से लिया जाता है तो इसका मजा दुगुना हो जाता है| लेकिन यदि आपको क्रिकेट के साथ बर्फीली पहाड़ियों का मजा भी उठाना है तो हिमालय की धौलाधर पर्वत श्रृंखला के पास स्थित 'हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम' (HPCA) या धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम ज़रूर जाना चाहिए|

2. युद्ध स्मारक धर्मशाला: वॉर मेमोरियल धर्मशाला में देखने की खास जगहों में से एक है। यह स्मारक शहर के पास देवदार के जंगलों में स्थित है और यह जगह यात्रा करने के लायक है। यह स्मारक है जो धर्मशाला के प्रवेश बिंदु पर उन लोगों की याद में बनाया गया है जिन्होंने हमारी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी थी।

3. डल झील और नाडी धर्मशाला: डल झील निचली धर्मशाला से 11 किमी दूर है और पहाड़ियों के पास देवदार के पेड़ों के बीच स्थित है। यह स्थान

"हिंदी जाननेवाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है।"

ट्रेकिंग और भ्रमण के लिए एक शुरूआती बिंदु है जो वाक के लिए झील के चारों ओर कवर किया गया है। इस झील के किनारे छोटा शिव मंदिर भी स्थित है जहाँ पर हर साल एक शानदार मेला लगता है।

4. भागसू नागमंदिर: हिमाचल प्रदेश धर्मशाला में भागसू नाग पर्यटन स्थल का नाम भागसू नाग इसलिए पढ़ा, दरअसल एक दैत्य का नाम भागसू था और नाग देवता से दैत्य ने वरदान लिया था कि उसका नाम श्रद्धालु पहलें लें। देश विदेश से पर्यटक इस स्थल की सुंदरता को देखने पहुंचते हैं।भागसू झरना भागसूनाग मंदिर के पीछे स्थित है। मानसून के दौरान, यह झरना एक पहाड़ के अलावा 30 फीट के झरने में बदल जाता है जो स्लेट से बनी किसी कलाकृति जैसा दिखता है।

5. दलाई लामा मंदिर परिसर : तिब्बती संस्कृति से परिपूर्ण दलाई लामा मंदिर परिसर जिसे त्सुगलाखंग मंदिर भी कहा जाता है, यह धर्मशाला में एक राजनीतिक-धार्मिक केंद्र है। शांतिपूर्ण ध्यान और धार्मिक प्रार्थना के लिए मंदिर में पहियों या माला मौजूद हैं। दलाई लामा मंदिर परिसर बौद्धों के लिए श्रद्धेय तीर्थ स्थल बन गया है। इसके अलावा यहां का शांतिपूर्ण वातावरण दुनिया भर के पर्यटकों को बेहद आकर्षित करता है।

6. अंजघर महादेव मंदिर: धर्मशाला से लगभग 20 कि.मी. दूर धौलीधर के खनियार गाँव में प्राचीन शिव मंदिर स्थित है जो पर्यटकों, शिव भक्तों, श्रद्धालुओं का प्रमुख केंद्र है। यह मंदिर लगभग 500 साल पहले बनाया गया था। इस मंदिर की सुन्दरता का मुख्य कारण इसका पहाड़ की चोटियों के बीच बसना है। साथ ही मंदिर के पास एक छोटा झरना जो यहाँ की सुन्दरता में चार चांद लगाता है। मंदिर के पास गुफा में शिवलिंग है जहाँ लोग पूजा, अर्जना करते हैं। माना जाता है कि महाभारत के समय अर्जुन ने भगवान शिव कि आराधना कर यहीं महान पशुपति शस्त्र पाया था।

7.सेंट जॉन इन द वाइल्डरनेस चर्च: धर्मशाला के पास और मैकलोडगंज के रास्ते में स्थित, यह सुंदर चर्च नव-गॉथिक जॉन द बैपटिस्ट के स्मरण में बनाया गया था। हरे-भरे देवदार के जंगलों के बीच, बना यह सुंदर चर्च अपनी बेल्जियम के स्टैंड-ग्लास से बनी

खिड़कियों के लिए धर्मशाला का सबसे प्रमुख पर्यटक स्थल माना जाता है।

8. मैक्लॉडगंज मार्केट: धर्मशाला से 5 किमी दूर हैं मैक्लॉडगंज एक सुंदर शहर है जो तिब्बती आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा के घर होने के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है, जो ऊपरी धर्मशाला के पास स्थित है। राजसी पहाड़ियों और हरियाली के बीच बसा मैक्लॉडगंज सांस्कृतिक रूप से एक प्रमुख तिब्बती प्रभाव से धन्य है, जिसका प्रमुख कारण यहां की तिब्बतियों की बस्तियां हैं।दुनिया भर से आने वाले लोग इस जगह खरीदारी करना भी पसंद करते हैं।

9.ग्युतो मठ धर्मशाला: यदि आप भी अपनी रोजमर्रा की ज़िंदगी से थोड़ा सा आराम चाहते हैं और कुछ पल केवल अपने साथ बिताना चाहते हैं तो आपको भी धर्मशाला के गियुतो मठ की यात्रा करनी चाहिए| शान्ति के वातावरण के साथ बौद्ध धर्म के इतिहास और दुनिया भर में प्रयोग किए जाने वाले तांत्रिक अध्ययन के लिए यह मठ जाना जाता है। इस मठ में आपको कई ऐसी कहानियाँ भी सुनने को मिलेंगी जिन्हें आपने कहीं और नहीं सुना होगा जो आपको एक अलग ही तरह की सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती हैं।

धर्मशाला में स्थानीय भोजन: यहाँ आप धर्मशाला में खाने की जगह देख रहे हैं तो बता दू कि तिब्बती संस्कृति का वर्चस्व होने की वजह से यहां ज्यादातर तिब्बती व्यंजन मिलते हैं। मोमोज, थुकपा और अन्य तिब्बती व्यंजन का स्वाद आप यहां चख सकते हैं। इस जगह की एक और खास चीज है कि यहाँ पर शहद अदरक नींबू की चाय काफी प्रसिद्ध है। हमने तिब्बती प्रकार का समोसा, सूप और नूडल्स जैसे खाने का खूब मजा लिया ।

धर्मशाला की खूबसूरती को देखने के बाद अंत में मैं यही कहना चहुंगी की –

यह वादियाँ यह पहाड़
हमें यही रोक लेते है
हम जब जब इन्हे देखे
यादों में खो जाते हैं।

कसौली की यात्रा

अनन्या
सुपुत्री पंकज वोहरा, उप निदेशक

शहर की भीड़ और शोर से दूर कसौली एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। मैं और मेरा परिवार दिसम्बर की छुट्टियों में कसौली घूमने गए थे। सच कहते हैं हिमाचल के पहाड़ों की सुंदरता सबका मन मोह लेती है। हम तीन दिनों के लिए कसौली गए थे। पहले दिन हम मंकी पॉइंट घूमने गए। मंकी पॉइंट कसौली की सबसे ऊंची चोटियों में से एक मानी जाती है। इस चोटी पर हनुमान जी का एक सुंदर सा मन्दिर स्थित है। जब हम ऊपर पहुंचे तो ऐसा लगा जैसे की हमने परियों के देश में प्रवेश कर लिया हो। ऊपर से दूर-दूर तक पहाड़, सड़कें और गाड़ियां दिखाई दे रही थीं और हम तो जैसे बादलों को छू रहे थे। गाड़ियां इतनी ऊंचाई से चीटियों की तरह प्रतीत हो रही थी। ऐसा नज़ारा हमने पहली बार देखा था। इतना चढ़ के ऐसा नज़ारा देखने के बाद हमारी सारी थकान दूर हो गई। मैं और मेरा छोटा भाई बहुत खुश हुए, हम शायद पहली बार इतनी शांति को महसूस कर पा रहे थे। मंकी पॉइंट देखने के बाद हम गिल्बर्ट ट्रेल गए। यह एक ऐसा स्थल है जो एक तरफ से पहाड़ियों से और दूसरी तरफ जंगलों से घिरा हुआ है। यह जगह आपको प्रकृति को पास से महसूस करने का अनुभव देगी। हमने सनसेट प्वाइंट भी देखा पर दोपहर का समय होने के कारण हम सूर्य को ढलते हुए नही देख पाए। दूसरे दिन हम मॉल रोड़ घूमने गए। वहाँ पर बहुत रौनक थी। हमने वहाँ का मशहूर ब्रेड समोसा और गुलाब जामुन खाया और उसके साथ चाय भी पी। हमने वहाँ से खरीददारी भी की और मुझे आभास हुआ कि कसौली शिमला से सस्ता है। फिर हम क्राइस्ट चर्च भी गए। वहां बहुत मजा आया और तीसरे दिन हम वापिस आ गए। यह सफर बहुत मजेदार था और कसौली घूमने का मेरा यह सफर बहुत आनंदपूर्वक था। मैं बहुत जगह घूमी हूं पर हिमाचल की प्रकृति और शांतिमय पहाड़ों के सामने वह कुछ नही है।

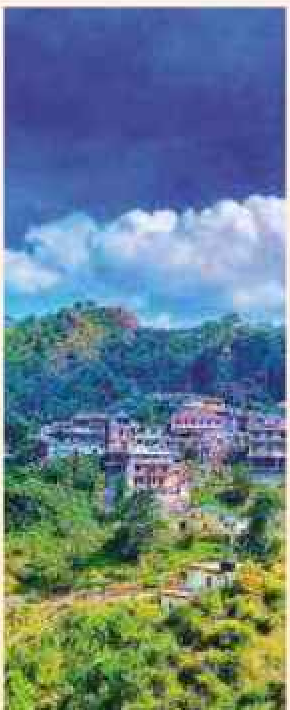

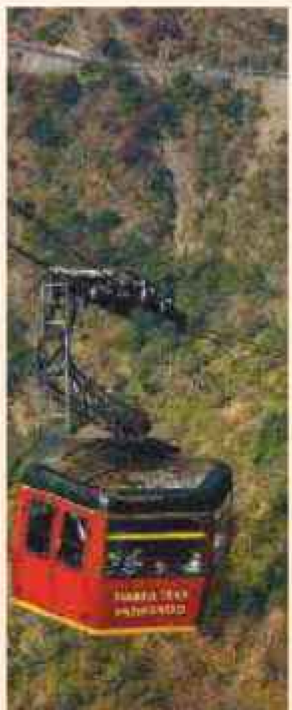

कर्मचारी संघ
संगठित शक्ति का सूत्रधार

अमनदीप सिंह
सचिव, एसिक कर्मचारी संघ, पंजाब

कर्मचारी संघ, वह संगठन जिसका उद्देश्य कर्मचारियों के हितों की रक्षा करना और उन्हें बेहतर कार्यस्थल प्रदान करना है। यह एक ऐसी शक्ति है जो न केवल कर्मचारियों का जीवन बेहतर बनाती है, बल्कि उद्योगों और समाज को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। इस निबंध में, हम कर्मचारी संघों के महत्व, उनके कार्यों, और उनकी चुनौतियों पर चर्चा करेंगे।

महत्व: कर्मचारी संघ कई कारणों से महत्वपूर्ण हैं:

शक्ति का संतुलन: वे कर्मचारियों को एक सामूहिक आवाज देते हैं, जिससे उन्हें नियोक्ताओं के साथ बातचीत में बराबरी का दर्जा हासिल होता है। यह बातचीत के माध्यम से वेतन, लाभ, सुरक्षा, और कार्यस्थल के माहौल में सुधार लाने में मदद करती है।

न्याय का समर्थन: संघ अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं और कर्मचारियों को उनके अधिकारों की रक्षा करने में सहायता करते हैं। यदि कोई कर्मचारी भेदभाव, उत्पीड़न, या अनुचित बर्खास्तगी का सामना करता है, तो संघ उनका समर्थन करते हैं और उन्हें न्याय दिलाने में मदद करते हैं।

स्वस्थ कार्यस्थल का निर्माण: संघ स्वस्थ और सुरक्षित कार्यस्थलों को बढ़ावा देते हैं। वे सुरक्षा मानकों को लागू करने, दुर्घटनाओं को रोकने, और स्वास्थ्य लाभों में सुधार के लिए काम करते हैं।

कार्य: कर्मचारी संघ कई कार्य करते हैं, जिनमें शामिल हैं:

सदस्यता अभियान: नए सदस्यों को जोड़ना और संगठन को मजबूत करना।

शिक्षा और जागरूकता: कर्मचारियों को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करना और उन्हें उनके कार्यस्थलों में शामिल होने के लिए प्रेरित करना।

शिकायत समाधान: कर्मचारियों की शिकायतों का समाधान करना और उन्हें न्याय दिलाना।

चुनौतियां: कर्मचारी संघों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

नियोक्ताओं का विरोध: कुछ नियोक्ता संघों को कमजोर करने की कोशिश करते हैं और उनकी गतिविधियों का विरोध करते हैं।

आंतरिक विभाजन: कभी-कभी संघों के भीतर ही विभाजन हो जाते हैं, जिससे उनकी ताकत कमजोर हो जाती है।

निष्कर्ष: कर्मचारी संघ समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं। वे कर्मचारियों के अधिकारों की रक्षा करते हैं, बेहतर कार्यस्थल बनाने में मदद करते हैं, और आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं। हालांकि उन्हें चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वे एक मजबूत और संगठित शक्ति के रूप में समाज को बेहतर बनाने के लिए काम करते हैं। यह आवश्यक है कि हम कर्मचारी संघों का समर्थन करें और उनके अधिकारों की रक्षा करें, ताकि वे अपना महत्वपूर्ण कार्य जारी रख सकें।

ई-ऑफिस में
राजभाषा हिंदी का प्रयोग

पूनम कांत, सहायक

सरकारी कार्यालयों में कई रिपोर्टें भेजी जानी होती है। इन्हीं रिपोर्टों में से एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट है राजभाषा हिंदी की रिपोर्ट। आज जब कार्यालयों में ई-ऑफिस का प्रयोग टिप्पण आलेखन व पत्राचार के लिए करते हैं। इनमें राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रख सकते हैं –

नई फाइल बनाने समय

फाइल का नाम विषय में द्विभाषी रूप में लिखें।

फाइल बनाते समय भाषा के विकल्प में हिंदी का चयन करें।

डाक डायरीज करने समय

अगर पत्र हिंदी में प्राप्त हुआ है तो भाषा के विकल्प में हिंदी का चयन करें।

कॉनटेक्ट विवरण में नाम, पता, विषय आदि विवरण को हिंदी में भरें।

टिप्पणी देते समय

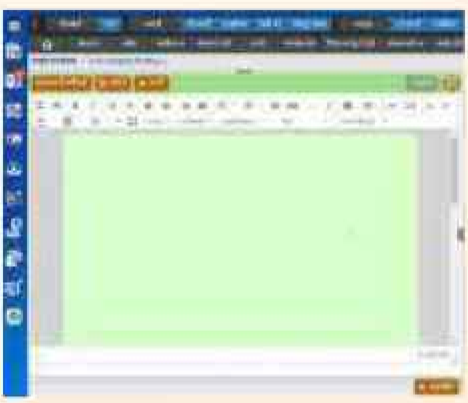

टिप्पणी हिंदी में टंकित करें। हिंदी में टिप्पणी लिखने के लिए टिप्पणी की भाषा का चयन हिंदी में करें। इसके लिए एफ9 बटन का भी प्रयोग किया जा सकता है। अगर इंस्क्रिप्ट की- बोर्ड में टंकण आती है तो सीधे हिंदी में टंकण कर टिप्पणी लिखें। ई-ऑफिस में भाषा का चयन हिंदी करने बाद अंग्रेजी में फोनेटिक रूप में सीधे हिंदी टंकण किया जा सकता है। बोलकर टाइप करने के लिए विंडोज+एच का बटन दबाएं। फिर माइक के बटन को क्लिक कर बोल कर हिंदी में आसानी से टंकण किया जा सकता है। इसके लिए कंप्यूटर की भाषा में हिंदी का चयन किया जाना चाहिए।

मसौदा बनाते समय

मसौदा हिंदी में तैयार करें। दाएं तरफ के विवरण में भाषा के विकल्प में हिंदी का चयन करें। विकल्प में सभी मदों यथा मसौदे की प्रकृति, पत्र व्यवहार का रूप आदि चुनें। विषय को हिंदी में लिखें। पत्र शीर्ष टेम्पलेट से द्विभाषी रूप में प्रयोग करें।

ई ऑफिस में अनुवाद टूल का उपयोग

मसौदा में टंकित सामग्री का चयन कर अनुवाद को क्लिक करें। अनुवाद का पेज खुलने पर अनुवाद क्लिक करें। फिर अनुदित पाठ को कॉपी कर मसौदा में पेस्ट किया जा सकता है। अनुवाद की जांच कर आवश्यक संशोधन कर लें।

इन बातों का ध्यान रख कर ई-ऑफिस में 100 प्रतिशत कार्य का निष्पादन हिंदी में किया जा सकता है। हिंदी रिपोर्ट बनाते समय प्राप्त पत्रों, उनके उत्तर तथा भेजे गए पत्रों का विवरण ईऑफिस से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

कार्यालय मे वर्ष 2024 की
पहली तिमाही की एक झलक

सीमा रावत, उप निदेशक

पुराना साल बीत चुका है। उससे मिली खट्टी-मीठी यादों और ढेर सारे अनुभवों के साथ दुनिया 2023 को विदा कर 2024 में प्रवेश कर चुकी है। वैसे तो हम सबका अधिकतर समय कार्यालय के कार्य करने मे ही बीतता है। परंतु अगर बीच-बीच मे कुछ रोचक गतिविधियाँ होती रहें तो दफ्तर का कार्य करने मे कर्मचारियों मे और उत्साह बढ़ जाता है। तो इस नव वर्ष 2024 का आगमन भी कुछ ऐसे ही हुआ और अब तो पहली तिमाही भी समाप्त होने को है।

जनवरी : जनवरी माह मे नव वर्ष का स्वागत पंजाब के प्रसिद्ध लोहड़ी पर्व को मनाते हुए किया। लोहड़ी त्योहार फसल पकने और अच्छी खेती के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। सूर्य के प्रकाश व अन्य प्राकृतिक तत्वों से तैयार हुई फसल के उल्लास में लोग एकजुट होकर यह पर्व मनाते हैं। इस दिन सभी लोग इकट्ठा होकर सूर्य भगवान एवं अग्नि देव का पूजन कर उनका आभार प्रकट करते हैं।भारत में लोहड़ी का त्योहार मकर संक्रांति से एक दिन पहले 13 या 14 जनवरी को मनाया जाता है. ये त्योहार उत्तर भारत का प्रसिद्ध त्योहार है. लोहड़ी माता सती की याद में मनाई जाती है लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य सभी के साथ घुल मिलकर शीत ऋतु की सबसे बड़ी रात को सबके साथ मिलकर जश्न मनाना है. कार्यालय मे भी सभी कर्मचारियों ने इस त्योहार को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं करवाई गई। विजेताओं को पुरस्कार भी दिये गए। जलपान के उपरांत होलिका दहन किया गया और ढ़ोल की थाप पर सभी कर्मचारी / अधिकारी खूब नाचे और इस तरह नव वर्ष का आरंभ धूम धाम से हुआ।

इसी माह मे 26 जनवरी को कार्यालय मे गणतन्त्र दिवस भी बहुत ही हर्षोल्लास व गर्व से मनाया गया। राष्ट्रीय ध्वजारोहण उपरांत राष्ट्रीय गान से पूरा कार्यालय गूँज उठा। इस पावन पर्व मे न सिर्फ कार्यालय के कर्मचरियों ने हिस्सा लिया बल्कि कई कर्मचरियों के बच्चो ने भी सभी प्रतियोगिताओं मे भाग लिया व पुरस्कार जीते। सबके हृदय देश प्रेम से ओत प्रोत थे।

फरवरी : नव वर्ष के दूसरे माह मे दिनांक 29.01.24 से 02.02.24 तक पूणे मे केंद्रीय स्पोर्ट्स मीट का आयोजन किया गया जिसमे पूरे भारत से ज़ोनल खेलो के विजेता व उप विजेता खिलाडियों ने भाग लिया। क्षेत्रीय कार्यालय पंजाब से भी 21 खिलाडियों ने इस स्पर्धा मे भाग

लिया और बेहतरीन प्रदर्शन किया। क्षेत्रीय कार्यालय पंजाब की पुरुषों की बैडमिंटन टीम इसमे उप विजेता रही और हमारे कार्यालय का नाम रोशन किया। टीम के कप्तान श्री विवेक कुमार को दिल्ली मे ESIC दिवस समारोह पर 24.2.24 को Director General , Labour Minister व अन्य कई गणमान्य व्यक्तियों द्वारा पुरस्कार दिया गया।

मार्च : 8 मार्च को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य मे कार्यालय मे भी सभी महिलाओं ने खूब उत्साह से यह दिवस मनाया जिसका उद्घाटन ZMC महोदया व क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा किया गया। क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने इस अवसर पर सभी महिलाओं को बधाई दी व कार्यालय मे उनके काम को सरहनीय व उत्तम ठहराया। ZMC महोदया ने भी न सिर्फ सभी महिलाओं का उत्साह बढ़ाया साथ ही उन्होनें हर कार्यक्रम मे बढ़ चढ़ कर हिस्सा भी लिया।

इसी माह होली का रंग भर त्योहार भी आता है तो कार्यालय मे भी सभी कर्मियों ने एक दूसरे को रंग लगाकर शुभकामनाएं दी।

इस प्रकार कार्यालय मे नव वर्ष की पहली तिमाही बहुत ही खुशियों और हर्षोल्लास के साथ इस उम्मीद के साथ बीती कि यह पूरा वर्ष क्षेत्रीय कार्यालय पंजाब व इसमे कार्यरत सभी कर्मचारियों / अधिकारियों के लिए शुभ व प्रगतिशील रहे।

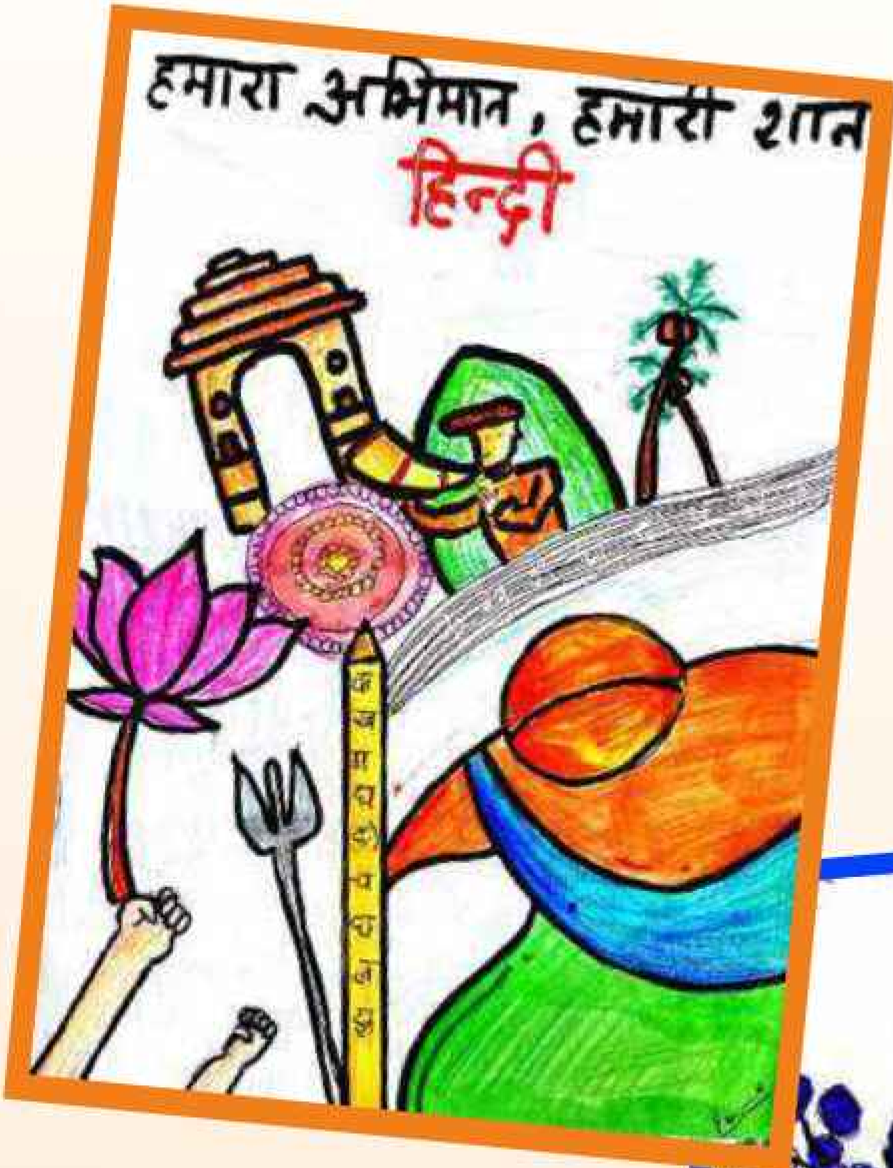

सुश्री कनिष्का
सुपुत्री अंजलि वर्मा

कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग
वर्ष 2022-23
प्रथम पुरस्कार
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

प्रशस्ति पत्र

उपलब्धि

पेंटिंग: पीयूषा प्रियदर्शनी धर्मपत्नी संजय कुमार दास, अधीक्षक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़

ऑनलाइन पढ़ने / डाउनलोड करने के लिए सामने दिए गए वेबलिंक का प्रयोग करें

क) ई–पत्रिका:
https://tinyurl.com/3safutb2
ख) पीडीएफ:
https://tinyurl.com/2sk4xrx9

स्मार्टफोन / टेबलेट पर पढ़ने / डाउनलोड करने के लिए क्यूआर स्कैनर से सामने दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें

ई–पत्रिका

पीडीएफ